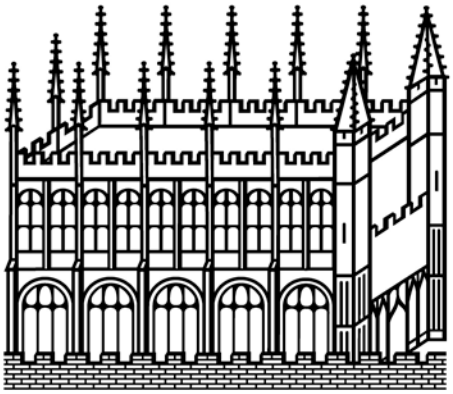


Bodleian Libraries

UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks



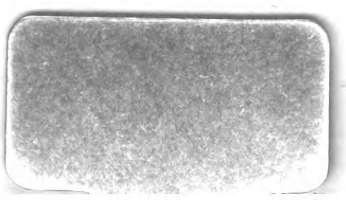
This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.

Hindi Sukl K 1

13.D.34.

Indian Institute, Oxford.

The Lucknow Sparks Library.
Presented
by
Munshi Newul Kishore.



Jñāna ābhūshaṇa.

Gyan Abhooshan.

ज्ञानआभूषण॥

जिसमें

भूतभविष्य वर्तमान इत्यादि चतुर्वर्णोंके धर्म कर्म नियमादि व योग्यायोग्य वस्तुवोंके निषेध वर्तीव व श्रीसच्चिदानन्द आनन्द कन्द परब्रह्म परमेश्वरकेदशो अवतारोंकी कथा अतिसुगम छन्द प्रबन्ध में वर्णित है।

जिसको

उन्नाम प्रदेशान्तर्गत बड्रिकाग्राम निवासि पण्डितकृष्ण विहारी शुक्लने अतीव परिश्रमकरके सर्व्वमहात्माओं व रसिक जनोंके उपकारार्थ निर्मितकिया।

वही

पहिलीबार

लखनऊ

मुंशीनवलकिशोरके यंत्रालयमें मुद्रितहुई॥

मार्च सन १८८३ ई०॥

बिज्ञापन ॥

इस महीने अर्थात् मार्च सन् १८८३ ई० पर्य्यन्त जो पुस्तकें बेचने के लिये तैयार हैं वह इस सूचीपत्र में लिखी हैं और उनका मोल भी बहुत किफ़ायत से घटाकर नियत हुआहै परंतु व्यापारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जिनको व्योपारकी इच्छाहो वह छापेखाने के मुहतमिम अथवा मालिक के नाम ख़तभेजकर क़ीमत का निर्णय करलें ॥

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
भाषा (इतिहास)	हरिबंश पर्व	रामायण कबितावली
महाभारत	म०भा०पर्वअलेहदाभीहैं	रामायणगीतावलीसटीक
१ पहिले हिस्सामें	रामायणरामबिलास	बिनयपत्रिका बा० मे०
आदिपर्व, सभापर्व	रामायण तुलसीकृत	बिनयपत्रिका बा० शि०
बनपर्व	रामायण सटीक मये	लिङ्गपुराण
२ दूसरे हिस्सामें	मानसदीपिकाकोषआदि	बिष्णु पुराण
बिराटपर्व, उद्योगपर्व	तथाजिल्दबंधी	गरुड़पुराण प्रेतकल्प
भीष्मपर्व, द्रोणपर्व	तथामोटेअक्षरोंकी	ब्रह्मोत्तर खण्ड
३ तीसरे हिस्सामें	मयेतसवीर व छेपक	**बैद्यक भाषा**
कर्णपर्व, शल्यपर्व	रामायण तुलसीकृत	निघंटु
गदापर्व, सौप्तिकपर्व	सातोंकाण्ड	अमरबिनोद
यौशिकपर्व, बिशोकपर्व	१ बालकांड	वैद्यजीवन
स्त्रीपर्व, शान्तिपर्वमें	२ अयोध्याकांड	औषधिसंग्रहकल्पवल्ली
राजधर्म आपदधर्म,	३ आरण्यकांड	अमृतसागर बड़ा
मोक्षधर्म	४ किष्किन्धाकांड	तथा छोटा
४ चौथे हिस्सामें	५ सुन्दरकांड	वैद्यमनोत्स व
शान्तिपर्व, दानधर्म	६ लंकाकांड	माधवनिदानसंस्कृत
अश्वमेध, आश्रमबासिक	७ उत्तरकांड	**नाटक**
पर्व, व मौशलपर्व	रामायण शब्दार्थ कोष	प्रबोधचंद्रोदय
बाणप्रस्थान पर्व	रामायणका इतिहास	रामाभिषेक
स्वर्गारोहण पर्व	रामायणमानसदीपिका	आनन्द रघुनन्दन

भूमिका ॥

दो० सर्व्व भूमि यह दुखमयी विदित सकल संसार ।
बिना भक्ति भगवानके लहै न कोउ निस्तार ॥

हे ममप्राणप्यारे हिन्दुस्तान बासियो निज मनमें ख्याल करके देखोतो ये अनेक २ प्रकारके दोष अर्थात् काम क्रोध मद लोभ मोह अहंकार ईर्षा तोड़ फोड़ इत्यादिक जिनके गुणोंके वर्णन करने में लेखनी डरयुक्तहोकर हाथसे छूट २ कर गिड़ २ पड़तीहै वोह ऐसे पराक्रमी शूरबीर गुप्त रूपसे किस प्रकार बचाव करना चाहिये हां प्रत्यक्षमें कोईरूप होता तो अवश्यही कुछ प्रबन्ध इनके बश करनेमें किया जाता परंतु गुप्त रूपसे कोई बुद्धि इन बेरियों के छटादेने में काम नहीं आती देखो इन्होंने कैसे बड़े बड़े राजाओं को निज बशमें फांस कर चूर चूर करदिया जिनके अब नामलेने में भी भयप्राप्त होताहै जैसे कि दुर्योधन व पौंड्रक व कंस इत्यादिकों को निज बशमें लाकर चूरही तो करदिया और युगों पर्यंत कलंकी भी करदिया जिनकी कथा पुराणों में अब तक बिख्यात है तिन ऐसे बली बेरियों से हम सबलोग किस तरहसे बचें बड़े कठिनता की बातहै इस लिये इनके दूर करनेके हेत में भी कुछ अपने ज्येष्ठभाई पण्डित बलदेव प्रसाद शुक्लकी आज्ञानुसार व निज मत्यऽनुसार इस ज्ञानआभूषण को पद्य भाषामें प्रगट कियाहै इसमें चतुर्वर्ण के धर्म्म कर्म्म और सदाचार ज्ञान व श्री सच्चिदानन्द परब्रह्म परमेश्वर के दशो अवतारों की कथा अति मनोहर छन्दोंसे सुशोभित की है और सब महात्माओंसे प्रार्थना करताहूं कि जो इस पुस्तक को अपने बिशाल नेत्रोंसे अवलोकन करके इसका मधुर रस पीवेंगे व इसके अनुसार बर्ताव करेंगेतो वही श्रीसच्चिदानन्द परब्रह्म परमेश्वरसे आशाहै कि इस जन्ममें निरोगी और सुखी रहकर अन्त में अति हर्षसे बैकुंठ बासको प्राप्त होवेंगे ॥

(कृष्णबिहारीशर्म्मा)

—— ० ——

श्रीगणेशायनमः ॥

ज्ञानआभूषण ॥

—0—

आदिखण्ड ॥

दो० सिद्धिकरण अशरण शरण बुद्धि रासि गुणधाम।
बिघ्नहरण मङ्गलकरण गणनायक अस नाम ॥
सो० होहु सो ममअनुकूल भक्त मनोरथ कल्प तरु।
हरहु बिषमगत शूल देहु ज्ञान निर्मल सघन ॥
चौ० नन्दबबा अरु यशुमति मैया। सहितरोहिणी हलधर भैया ॥ आदि सनातन हरि बनमाली। दुष्ट बिनाशन नाथन काली ॥ यमलार्ज्जुन तारन घनश्यामा। करहु कृपा मोपर अभिरामा ॥ देहुज्ञान अति जासु प्रभावा। रचहुं ग्रन्थ निज जनित स्वभावा ॥ आदिशक्ति मैं सुमिरौं ताहीं। सुमिरत सलभ ज्ञानदे मोहीं ॥ अखिल लोक ब्रह्माण्ड दिगीशा। बार बार नावहुं मैं शीशा ॥ देव दनुज किन्नर मुनि जेते। सकल चराचर सिद्धक तेते ॥ नर अरु नाग पितर गन्धर्ब्बा। प्रथक प्रथक बन्दौं मैं सर्ब्बा ॥ सूर्य्य चन्द्र दिति ध्रुव सतबारा। रामभक्त श्री पवनकुमारा ॥ जो कछु भूल होहि यहिमाहीं। अनुचर जानि क्षमहु प्रभु ताहीं ॥ अल्पबुद्धि अरु कथा पुनीता। कैसे रचहुं शुभग यह गीता ॥ होइ प्रसन्न सब पुरवहु आशा। जेहिबिधि करौं ग्रन्थ परकाशा ॥

दो० एकसमय सूमन्तमुनि मनमें कियो बिचार।
देश ग्राम देखैं कछू बिहरैं बिपिन मँझार॥

सो० अस प्रण जियमें ठानि गिरिजा नन्दन सुमिरकर।
गमनकियो सुखदानि हस्तिनपुर अवलोकनहिं॥

चौ० चलेजात मुनि सुहृद गँभीरा। बिज्ञ शिरोमणि अत्युतधीरा॥ हरिणछाल लियो उरमें लाई। सुन्दर गात बिभूत रमाई॥ अरुण नयन अरु हृदय बिशाला। कांध जनेउ हस्त शुभमाला॥ शिव शिव राम राम रट लागी। चलेजात मुनि आनँदपागी॥ देखत बन उपबन की शोभा। गुंजत चञ्चरीक मधुलोभा॥ चलतमनोहर तृबिधि बयारी। देखतछबि मुनिभये सुखारी॥ भाँति भाँतिके फूल सुहाये। नवकिशलय देखत मनभाये॥ मनहुं बसन्त शृङ्गार बनाये। फूलिरहा सुन्दर सुखदाये॥ मधुरमिष्ठ सुन्दर फलभारी। ताके भार रहीं लचिडारी॥ नृत्यत मोर निकर अतिचैना। मधुर मधुर सुर बोलहिं मैना॥ गुंजत मधुपकली बिच राजैं। कोकिल बचन बाद्यसम बाजैं॥ खग मृग बिहरैं बैर बिहाये। नानाबिधि के बेष बनाये॥

दो० क्रीड़त मरकट बिबिध बिधि हाव भाव देखराय।
ज्यों खेलत हैं कला को नटबेड़िया समुदाय॥

सो० तरुन लता पर बैठि कूंकू कोहकैं कोकिला।
गानकरैं सुर ऐंठि काम भरी प्रीतम बिरह॥

चौ० बनशोभा कछु बरणि न जाही। जहँ बसन्त ऋतु रहत सदाही॥ फूलैं फलैं बिटप बहुभांती। बरण

बरणकी लागैं पाती ॥ हालि उठत द्रुम पांतिन तीरा। शीतल दायक बहै समीरा ॥ बिबिधि बेलि लपटीं तरु माहीं। फूलिरहीं बहुरंग स्वहाहीं ॥ सकल बनस्पति अति सुखदाई। शुभ्र अरुणाता फूलन छाई ॥ झुंड झुंड विहरैं मृग पांती। करैं कलोलैं दिन अरु राती ॥ सकल भुम्मि शोभासों छाई। चिन्तामणि सम अतिहिस्वहाई ॥ कोमल बिमल शुभग अतिपावन। बहु रमणीय परम हुलसावन ॥ देखि बिपिन मुनि भये सुखारी। बैठे तरु तर अति तपधारी ॥ आस स्वासकरि बहुसुख लयऊ। क्षणकमात्रमें फिरि चलिभयऊ ॥ योजन द्वैक नगर जब रहेऊ। मुनिदेखत अति हर्षित भयऊ ॥ आधकोस तक कंटक वृक्षा। बहुगम्भीर घोरभय ऋच्छा ॥

दो० भालासम कांटा चुभे पत्र असीसम लागि।
अति गहरबन देखिमुनि कछु कीन्ह्यो अनुरागि ॥

सो० शाखा लगीं अकाश लपटी एकहि एकमें।
अतिभयदायक तास झुकी अँधेरी रैनिसम ॥

चौ० लपकैंपत्र बिज्जु जिमि चमकैं। बायु प्रवेश सन्धिहवै गमकैं ॥ कड़कैं लता लताहवै संगम। ज्यों आपुसमें लड़ैं भुजंगम ॥ देखि मुनीश चले भयत्यागे। आधकोश तक देखा आगे ॥ महाभयंकर दुस्तर खाहीं। देखत प्राण होहिं भयमाहीं ॥ चिघरैं सिंह घोर भयकारी। हौंकैं बारण प्राण निकारी ॥ झुण्ड झुण्ड मिलि भ्रमरैं भालू। शब्द अगाध करैं जिमि कालू ॥ दौड़ैं नाग बामिको त्यागी। धुवांप्रवेश जरै जिमि आगी ॥ अब आगे

का करौं बखाना। आधकोश का जेहि परमाना॥ बड़वा-
नल समान गहराई। जाकी थाह केउ नहिं पाई॥ अति
अगाध दुस्तर बहुभांती। भरा सलिल धारा हहराती॥
परे मच्छ मगरादिक जीवा। कच्छ गोह जे अतिबल
सीवा॥ देखि मुनीश हर्ष अतिभयऊ। आगे कोट
नजरि परिगयऊ॥

दो० चौड़ाई षककोश जेहि अर्द्धकोश उच्चान।
सकल नगरके घेरमें दीरघगढ़अतिजान॥

सो० बिरच्योमानोदेव अद्भुतकिलास्वहावनहि।
पार न पावै केव चक्रवर्त्त जे भूमिपर॥

चौ० ठौर ठौरमें तोपै लागीं। चमकैं घाटिनमें घुड़
बागी॥ सूर्यझमक्कनि चन्द्रलपक्कनि। कालीभूरी बिज्जु
दमक्कनि॥ बायुवेग घोड़े नहे जामें। परे जँजिरहागोला
तामें॥ जाके दगत महाभयकारा। चूरचूर ह्वैजायँ प-
हारा॥ लपकैं बाढ़ि चीरवां केरी। ज्यों दमकै द्युति भादौं
केरी॥ लिये सिपाह बीररस जाके। जगह जगह पर
पहरा ताके॥ नङ्गी चढ़ीं सँगीनैं सोहैं। बरछी लपकि
हियहि भय पोहैं॥ फिरैं सवार ढाल अड़िआये। दुइदुइ
किरच कमर लटकाये॥ भाला तुपक कटारी लीन्हे।
मानो युद्धकरन मनदीन्हे॥ यहिबिधिते लागे सबठौरा।
बाजि सवार सर्ब शिरमौरा॥ सकल देखि मुनि हिये
सराही। आगे चलतभये क्षण ताही॥ देखी पुष्पबाटिका
शोभा। देखत शुभग अतिव मनलोभा॥

दो० आमनीय कचनार जहँ रहेफूलि छबिछाय।

झूमें लता अशोककी मन्दपवन को पाय ॥
सो० सुंदर बहै समीर हालि उठत सब पाततरु।
करैं कोकिला कीर दाख छुहारन बैठि रव ॥

चौ० कमला कुसुम अगस्त स्वहाये। जुही केंवड़ा की झरिलाये ॥ जामुन लवँग कदम मनमोहैं। दाड़िम कुंद मालती सोहैं ॥ मेहदी केवड़ाकी छबिछाई। नास-पाति केतकी स्वहाई ॥ तुन कचनार कुसुम की पाती। बिबिधिभांति पुरइनि छहराती ॥ केदलिपांति घनी घह-राई। मौनसिरी की अति छबिछाई ॥ सेमरपांति लगी बहुताई। पूरिरही जेहिकी अरुणाई ॥ चम्पाबेलि निवारि बिराजैं। फूलि फूलि गेंदा छबिछाजैं ॥ गुलतुर्रा गुल-सब्बो फूलैं। तापर बया बैठि सुख झूलैं ॥ गुलाबांस केतकी बिराजैं। फूलि गुलाब अतिहि सुखछाजैं ॥ बेला बहँकि बहँकि रहिजावैं। गुलमेहदी गुलखैर स्वहावैं ॥ दुपहरिया दुपहर सम खिली। सूर्य्यमुखी लहैंकै झिल मिली ॥ गुड़हर कृष्णकामता राजैं। नैनिबेटि अतिही छबिछाजैं ॥

दो० झँडुले फूल कनेर के सुर्ख सपेदा आदि।
गुलचांदनीगुलाबकेभांतिभांतिपुष्पादि ॥
सो० फूलमनोहरदेखिअतिहीमुनिहर्षितभये।
कमलाबेलिबिशेषि गुंजरहेजहँभौंरगण ॥

चौ० एकओर महँ बनी कियारी। तामें लटकि रहे फल भारी ॥ आंब फरेंद अमलि अधिकाई। बेल बहेरन की छबिछाई ॥ एला लवँग सुपारी राजैं। दाख छोहा-

रनकी छबिछाजै । कैथा पनस बेर अमरूता । नासपाति अँबरा सहतूता ॥ फरे अँगूर निम्बु फलभारी । अखरोटन की नैरहिं डारी ॥ दाख बदाम संगतरे राजैं । बड़हर झूमि झूमि छबिछाजैं ॥ सेव सरीफा किसमिस लीची । चन्दन बहँकिरहा बिच बीची ॥ लटकैं फलरतालुके भारी। जिमीकन्द की बनी कियारी ॥ नौरङ्गी रँगलाल देखावैं। सकरकन्द रँग अरुण स्वहावैं ॥ गुच्छा मूंगफलीके सोहैं। गुहे बदाम अधिक मनमोहैं ॥ सालिम मिसरीकी गरु-आई। रहे जायफल तरे लुकाई ॥ जमुनिन केरि श्यामता सोहै । दाड़िम देखि देखि मनमोहै ॥

दो० गुलरी फरीं अघायकर सुर्खमयीअवरेखि ।
केला तरु लटके परे भरे कलिन सों पेखि ॥

सो० महुवाकी टपलागि फरे बकैना हुब्बभरि ।
हैंकुदुरूजिमिआगि लदेअँजीरानीमसम ॥

चौ० बिहँसे मुनि देखत फुलवारी । जहँ शुक शोर करैं छबिभारी ॥ गुंजत मधुप चहूंदिशि छाई । केलिकरैं खंजन सुखदाई ॥ थिरकि थिरकि नाचत कलमोरा । कोकिल शब्दकरैं चहुंओरा ॥ देखत मगचिकनी छबि छाजैं । महरिबचन बाजन जिमि बाजैं ॥ चींचीं कूंकूं शोर मचावैं । भ्रमर बैठि कलियन गुंजावैं ॥ पपिहा पिउपिउ की रट लागी । फिरै चकोर चकोरिनि त्यागी ॥ नचैंमयूर पंख फैलाई । बायस शोर सुनो नहिं जाई ॥ चातक आशा स्वाति लगाई । बटयर तीतर रहे बर्राई ॥ बुल बुल करचोटिया फरीवैं । श्याम चिरैया शोर मचावैं ॥

ललगंडी कटकोरवा राजै। बया चिरकुवाकी गतिसाजै॥
हियेहर्ष मुनि पुलकित भये। मागिसराहि अग्रको गये॥
देखा नगर बिचित्र स्वहावा। पुरपैठत अतिही सुखपावा॥

इतिश्रीज्ञानआभूषणे कृष्णबिहारीशुक्लबदर्का
निवासिबिरचितेसुमन्तुमुनिहस्तिनापुर
गमनबर्णनोनामप्रथमोंऽशः॥ १॥

दो० देखतनगरबिचित्रअति हियहुलसानिमुनीश।
बर्णो ताको भेदमैं सुमिरि चरण जगदीश॥

सो० अतिहि सुहावन पूर मानो बिरच्यो देवतन।
इर्दगिर्द सबशूर लिये किर्च पहरा करहिं॥

चौ० लागे फाटक चारि स्वहावन। तापैताज खिचे मनभावन॥ ताऊपर शुभबनी अटारी। तापर शूरकरैंरखवारी॥ मुनि प्रवेश भीतर को करेऊ। मंदिर देखिअतुल सुख लहेऊ॥ यक महला द्वै महला ठाढ़े। महल तेमहलाते अतिबाढ़े॥ नारी चितवैं खड़ी झरोखा। करैं हास्य पुरवैं मनशोखा॥ महलन चढ़ी खड़ी अलबेली। करैं केलि अति चतुर सहेली॥ आपस माहिं गुलाल उड़ावैं। रंगभरे केसरि घटनावैं॥ रँग भरि २ लैलै पिचकारी। एकनारि यक ऊपर डारी॥ काहूनैन पर्यो रँग जाई। कर नयनन दै बहुत रिसाई॥ काहूके कुच कौनिउनारी। करि स्पर्श भगैदै तारी॥ रंग अरुण की कीच मचाई। रंग बैगनी की छबिछाई॥ हरारंग कलसन महँ घोरैं। रँग जाफरी लोटन बोरैं॥ जोकाहुक पकरे धरिपावैं छोड़ि रंग अतिखेल खेलावैं॥

ग्यकीन्ह्यों आगमना। सुंदर दरश दिखायो अपना॥ बिश्व मूर्त्ति रक्षक भूतारथ। धरे भेष बिहरौ परस्वारथ॥ रामभक्त तुम परम कृपाला। दीन जानिमोहिंकियो निहाला॥

दो० सकल बिश्वके हेतुतुम धरे फिरौ यह भेश।
सुंदर दरश देखायकै करहु कृपा हरिक्लेश॥

सो० मुनिनशिरोमणिमाय दियासुःखअति मोहिंपर।
सुंदर बदन देखाय पुरवहु आशा दासकी॥

चौ० बिहँसे मुनिअतिहर्ष बढ़ाई। बोले बचनसुधाकी नाई॥ धर्मपालगो रक्षकत्राता। सकल सृष्टिभूषणबिख्याता॥ सर्ब मण्डली मण्डल नायक। गोद्विज ब्राह्मण क्षत्री पालक॥ पोषण धर्म ज्ञान बलवाना। अरिहि बिनाशन सबजग जाना॥ सज्जन कीर्त्ति सुयश अतिपावन। सकल प्रजाके प्रियमन भावन॥ बंश शिरोनणि सबजग जाना। समर भुम्मिमें सिंह समाना॥ और बंशमें कहौं बखानी। जाके सुनत पापकी हानी॥ पूरब ब्रह्मा सृष्टि बनाये। दोसुत तिन अपने उपजाये॥ तिनके दक्ष अत्रि ये नामा। भे बिज्ञान मोक्ष के धामा॥ दक्ष सूर्य्यवंशी कहलाये। अत्रि चन्द्रबन्शी जगछाये॥ चन्द्रबंश में भयो ययाती। पांचपुत्र ताके बिख्याती॥ यदु तुर्ब्बसु द्रह्यु अनुये नामा। बेटा पुरु अतिही बलधामा॥

दो० पुरु का बंश पराक्रमी भे द्वैसुत बलवान।
कौरवपांडवनामतेहिधर्योव्यासप्रियजान॥

सो० कौरव के धृतराष्ट्र तिन उपजाये शत पुरुष।

दुर्य्योधनादिकराष्ट्र चित्तसेन दुःशासनहि ॥

चौ० पाण्डव के पांडव मनमोहैं। तिनके पांच पुत्र जगसोहैं ॥ अर्जुन भीमादिक सहदेवा। नकुल युधिष्ठिर अतिबल सेवा ॥ इनकी कीर्त्ति बरणि नहिजाई। सूक्षम भेद कहौं मैं गाई ॥ भये युधिष्ठिर धर्म प्रकाशा। मिथ्या बचन करत नहि तासा ॥ अर्ज्जुन बाणावली बखाना। हयसादी में नकुल सुजाना ॥ दश सहस्त्रहस्तीकर बूता। भीमसेन राखत मजबूता ॥ पंडितभे सहदेव सुजाना। ज्योतिष में दूजोनहिं आना ॥ पांचो माहिं बराबर प्रीती। रहैसदा बरताव सहीती ॥ दुर्योधन कुरुबंशी राजा। एकदिन सभामाह शुभछाजा ॥ बोलि पठाइसि पांचौ भाई। द्यूत युद्धका खेल बनाई ॥ होन द्यूत लाग्यो अधिकाई। लैलै पाशा देहिं चलाई ॥ राज्य नारिकी बाजी लागी। जोहारै सो जावैत्यागी ॥

दो० बारहबर्ष मियादलगि जावहि राज्यहि त्यागि ॥
देखि परैजो बीचमहँ पावै राज्य न माँगि ॥

सो० फेरि करै बनबास बारह बर्ष बिताय कर।
करै राज्यकी आश लगी शर्तयह दाँवपर ॥

चौ० हँसिकै पांसा धर्म उठाये। किये रोष अति जोर चलाये ॥ हारि हारि सब क्षत्री बोले। दुश्शासन शकुनी मुखखोले ॥ टेरि कहै दुर्योधन बीरा। छोड़हु राज्य जाहु बनधीरा ॥ दुश्शासन से कहा हकारी। लावहु नारि सभामहँ प्यारी ॥ आज्ञापाय तुर्त लैगयऊ। देखत छबि अति हर्षित भयऊ ॥ बस्त्र बिहीन करौ यह

कथा कहौं अनपावनी जासे होहुं निहाल ॥

सो० कथापियूष समान सुनहुभूप चितलायकर।
जासुसुने कल्यानस्वर्ग मोक्षदोऊमिलहिं ॥

चौ० सृष्ट्युत्पत्ति कहौं मैं गाई। सुनहु भूप तुम चित्त लगाई ॥ पूरुब अन्धकार देखरावै। गुण अवगुण कछु भेद न पावै ॥ सकल भूतमय सूक्ष्म जितेन्द्रिय। श्रीनारायण के जिय भेदिय ॥ करौं सृष्टि रचना मैं प्यारी। अस बिचारि भरि दीन्ह्यों बारी ॥ तामें बीर्य्य पतनप्रभु कीन्हां। सकल सृष्टिताते रचिदीन्हा ॥ उग्र बीर्य्य शुक्र रेत कहाये। बीर्य्य नाम ब्रह्माने बताये ॥ गिरत बीर्य्य जल अंडज भयऊ। सोन प्रकाश छाय जलगयऊ ॥ उस अंडज से भयो उदारा। ब्रह्माजी लीन्ह्यों अवतारा ॥ क्षेत्रज्ञ पुरुष शंभु नारायण। कमलासन बिरंचि तारायण ॥ ए सब नाम ब्रह्मके राजैं। एकहि अर्थ सकल के छाजैं ॥ जलका नाम नार मुनि गावैं। अयन तासुअस्थान बतावैं ॥ सन्धि मिले नारायण साजैं। ऐसहि अर्थ एक सब राजैं ॥

दो० सदसत् नित्य अव्यक्तभे कारणते उत्पत्त।
यासों ब्रह्मानाम भा सकल जक्तमें व्यक्त ॥

सो० बहुदिनबिधितपकीनजानाध्यानप्रभावतब।
अंड फोरि तब दीन द्वैखडा तामें, किये ॥

चौ० एकखंडमें भूमिबनाई। दूसरसेआकश रचाई॥ आठौ दिशा बनायोताते। बरुणस्थानरच्यो बिधिवात ॥ महतत्व अहंकार गुणतीना। हेतुमनुष्यउत्पन्न प्रवीना ॥

आदि ब्रह्मआकाश बनाया। क्रमते बायु तत्व उपजाया॥ यहि बिधि देव आदि गण रचेऊ। पर्वत नदी खोहसब बिरचेऊ॥ काल बिभाग कियो तापाछे। ऋतु कल्पना कियो बिधिआछे॥ काम क्रोध मद आदि बनाये। कर्म बिवेक और उपजाये॥ धर्म अधर्म प्रजा बहु भांती। सुख दुख युक्त कियो सङ्घाती॥ कीनजो कर्म प्रजानरनारी। जाति बिभाग वहीते प्यारी॥ हिंसा सत्य असत्य प्रकाशा। धर्म अधर्म कि कीन्ह्यों आशा॥ मिले आपुही आपुसो आई। ज्यों ऋतु वृक्ष फरैं अधिकाई॥ लोकवृद्धि के अर्थ स्वहाये। मुखतेब्राह्मण बिधि उपजाये॥

दो० भुजसे क्षत्रि बनायकर बैश्य जांघसेकाढ़ि।
शूद्र चरणसोसिरजिकै कियोधराकी बाढ़ि॥

सो० पूरुब मुख ऋग्वेद देखत लियो बशिष्टने।
दक्षिणयाजुर्बेदयाज्ञबल्क्यलियो हर्षिकर॥

चौ० सामवेद निकला हर्षाई। पश्चिममुखब्रह्मा के आई॥ गृहण कियो गौतमऋषि ताको। अति सुख होय बढ़त में जाको॥ वेद अथर्बण उतर जाये। शौनक गृहण कियो हर्षाये॥ लोक प्रसिद्ध पांचवा मुखसे। अष्टादश पुराण श्रुति बिकसे॥ पुनि बिरंचि द्वैभागबनाये। अपनाहीं में ये उपजायें॥ दहिने भाग पुरुष शुभ राजै। बायें स्त्री अतिछबि छाजै॥ उनसे भयो बिराट प्रकाशा। फेरि सृष्टिकी कीन्ह्यों आशा॥ लगे करन तप बहुदिनताई। फिरिदश ऋषि उत्पन्न कराई॥ प्रजापत्य जे लोग कहावैं। प्रथक प्रथक् में ताहि बतावैं॥ नारद

पुलह पुलस्त्य सुहाई। अत्रिप्रचेता अतिसुख दाई॥ भृगु मरीचि अंगिरा बिराजैं। सहित प्रजापति दस ऋषिराजैं॥ यहि बिधि और बिरञ्चि बनाये। महा तेजस्वी जे शुभदाये॥

दो० पुनः देवतादैत्य ऋषि गन्धर्ब्बादि सहीत।
राक्षसपितरमनुष्यगणकहँलगकहौंअदीत॥

सो० बिजुली बादल पक्ष बज्र इन्द्रधनुबानरह।
धूमकेतु अति स्वक्षउल्काआदिनक्षत्र बहु॥

चौ० किन्नर मत्स्य कीटपातंगा। शूकर हस्ति अश्व बहु रंगा॥ मच्छी मक्खर आदि बनाये। सकल सृष्टि कहि जाय न गाये॥ बर्णौं अब तिनका क्रमभूपा। जैसे जन्म भयो सुखरूपा॥ हाथी मृग पिशाच पशु नाना। और मनुष्या जीव बखाना॥ येसब जरायुजरूप कहावैं। योनि भेद ये बाहर आवैं॥ कछुवा मगर मत्स्य नहिं पारा। येसब अंडज कहैं उदारा॥ मक्खी जूं खटमल इत्यादिक। ये स्वेदज हैं कहौं प्रकाशिक॥ वृक्ष औषधी येजो होवैं। इनको सब उद्भिज कहि गावैं॥ जो फल के पकनेतक रहहीं। इनके बादिनष्टह्वै जहहीं॥ ताको बिधि औषध कर भाखैं। यहि बिधिते सृष्टी सबराखैं॥ बिना पुष्प जिनमेंफल लागैं। वेई बनस्पतिकीहैंबागैं॥ पुष्प सहित फल जामें सोहैं। वेई वृक्षसकल जगमाहैं॥

दो० ऐसी बल्ली गुल्ममें जानो भेद सुजान।
पृथक्पृथक्कहँलगकहौंकबतककरोंबखान॥

सो० घने वृक्षजे लागि अन्तः संज्ञ कहावहीं।

समुझैं ते बड़भागि सुख दुखजो ऊपरपरै॥

चौ० कर्म बिवश अति तमसे घेरे। इससे बचन न कहत बनेरे॥ इस प्रकार बिधि बिरचि सँसारा। कीन्ही अतिव सृष्टि आपारा॥ जब आई बिधिकी निशि भारी। कीन्ह्यौं शयन सकल जगकारी॥ सकल सृष्टि तब भई बिनाशा। ज्योति समान ब्रह्मके पांसा॥ जब निद्रा त्यागो बिधिभारी। सकल सृष्टि तबरच्यो बिचारी॥ यहि बिधि सृजत हरत जगदीशा। कल्प कल्प उपजावैं ईशा॥ आदिकल्प सृष्टी उपजावैं। अन्त कल्प सब नाश करावैं॥ कल्पअजहिका द्योस कहावै। ताकी संख्या वेद बतावै॥ बार अठारह झपकैं आंखी। एक काष्ठा तेहि ममभाखी॥ तीस काष्ठा कलाबतावैं। तीस कलाको क्षण गोहरावैं। द्वादश क्षणबीतैं जबआई॥ एक मुहूर्त्त होहि तब भाई॥ बीतैं त्रिंश महूर्त्त भुवारा। दिवस रैनि तेहि कहौं पुकारा॥

दो० तीसदिवसकोमासकहियुग्ममासऋतुजान।
जबबीतैंऋतुतीनमिलिताको अयन प्रमान॥

सो० बीतैं अयन प्रचारि ह्वै दोएकहि सन्धिमें।
ताको बर्ष बिचारि कहैं पुराण प्रतिष्ठ जे॥

चौ० येसब भेद सूर्य्यके गाये। अब पितरों के कहौं बनाये॥ बीतै मासएक जब आई। रैनि दिवस पितरौं कीजाई॥ शुक्लपक्ष को रैनिबितावैं। कृष्णपक्ष दिनको मनभावैं॥ सूर्य्य वर्ष जब बीतैआई। दिवसरैनि द्योवतों की नाई॥ उतरायण को दिवस बखानैं। दक्षिणा-

यन को रात्रि प्रमानैं ॥ अबमैं संध्या कहौं बखाना। जो नरकी बीतै शुभठाना ॥ सहस्त्रअष्ट दस लक्ष द्वितीया। ताको सत्य युग कहौं प्रतीया ॥ बीतैं षोड़श सहस्त्र लक्षद्वै। त्रेता ताको कहौं प्रसन ह्वै ॥ सहस्त्र चवालिस एकै लक्षा। ताको द्वापर कहौं प्रत्यक्षा ॥ सहस्त्र बहत्तर बीतैं आई। कीलियुग की है यह प्रभुताई ॥ ये सब सन्ध्या भेद गनावा। अब आगेका सुनौ बनावा ॥ बीतैं सहस्त्र चौयुगी जबहीं। होय दिवस ब्रह्मा का तबहीं ॥

दो० अयुतदिवसबीतैंजबहिंयुग्मघड़ी हरिजान।
घटिद्वादशलक्षहोहिंजोअधपलरुद्र प्रमान ॥

सो० कहौं धर्मव्याख्तात धर्मअधर्मबखानि कर।
होंहि सुफलसबगात जाहिसुनेपातककटैं ॥

चौ० सत्ययुग धर्म धरे चौपावा। रहै बिराज्य धरणिपर छावा ॥ त्रेता चरण तीन महि छाजै। द्वापर दोय चरण शुभराजै ॥ कलियुग चरण एक महि धरिकै। रहै बिराजमान अस करिकै ॥ सत्ययुग नर शुभज्ञान बिराजैं। चत्यसतबर्ष भूमिमें राजैं ॥ त्रेता त्रिंशत बर्ष प्रमानै। रहैं भूमि में सबजग जानै ॥ द्वापर द्वै सत जियें बिचारे। कलियुग शतहिबर्ष प्रण धारे ॥ सत्ययुग में तपरहै प्रधाना। त्रेताज्ञान सबहि जगजाना ॥ द्वापर यज्ञकरैं शुभकारी। कलियुग दान प्रतिष्ठ बिचारी ॥ पढ़ैं पढ़ावैं यज्ञकरावैं। दान लहिं देवैं मनभावैं ॥ यज्ञकरैं सुंदर शुभकारी। ये षटकर्म द्विजनके भारी ॥ यज्ञ पठन जगरक्षित धर्म्मा। बिषयभोग ये क्षत्रियकर्म्मा ॥ दान

देहिं ये धर्म गनाये। बिधिने क्षत्रि लिये करवाये॥
दो० यज्ञ करन पढ़ना कृषी दान देव पशु रक्ष।
बिधिनेदीन्ह्योंबैश्यकोबणिजकर्म ये स्वक्ष॥
सो० पुनि बिधिने उपजाय सेवादीन्ही शूद्रको।
करो जगतमें जाय तीनबर्ण जे भूमिपर॥
चौ० यहि बिधिकर्मबांटिअज दीन्हा। अंगीकारसबन ने कीन्हां॥ पुरुष देंह अतिही शुभ राजै। नाभि भाग से ऊपर छाजै॥ ताहूमें मुख मुख्य प्रधाना। दशौ अंग ते उत्तम जाना॥ बिधिमुखसे ब्राह्मण निर्मयऊ। यासों सबमें उत्तम भयऊ॥ बहुत काल तप ब्रह्मा कीन्हा। तबब्राह्मणको रच्यो प्रवीना॥ यासों बिप्रभूमिका स्वामी। हैशिरताज जगतका नामी॥ जेहि बिधिपितर हव्यमुख खावैं। वामुख से ब्राह्मण निर्मावैं॥ सकल भूत में प्राणी श्रेष्ठा। प्राणी में बुधिमान सश्रेष्ठा॥ बुद्धिमान में मानुष जानों। मानुषमें ब्राह्मण शुभमानों॥ द्विजनों में विद्वान बतावैं। बिद्वजनों में कृत बुद्धिगावैं॥ कृतबुद्धियों में कर्मकरैया। तामें ब्रह्म वेता शुभकैया॥ ब्राह्मण धर्म बटोरन कारण। औधर्महुके शुभ आचरण॥
दो० ब्राह्मण सबमें श्रेष्ठ है तीन बर्णका राज।
जो चाहै सोई करै सुख दुख को शिरताज॥
सो० जो हियमें खुशहोय करैं सँहायत्रिबर्णको।
करै क्रोध जोसोय होय अभाव तुरंतही॥
चौ० इससे पूजनीय महिमाहीं। चलै प्रभुत्व आन को नाहीं॥ निजइच्छासे स्वर्गहिजावै। महर्लोक ता पा-

छेपावै॥ पुनि जनलोक सिधारै जाई। फिरि ब्रह्मत्व क होइ स्वहाई॥ यहसुनि शतानीक नृपबोले। हेसुमंतु मैं कहौं यखोले॥ ब्रह्मलोक ब्रह्मत्व जो आही। तामैं द्विज कौनी बिधिजाही॥ सो समुझाय कहौ मुनिजाते। मिटै सँदेह बढ़ै सुखताते॥ सुनि बोले मुनि सुनहु महीपा। सब वृतांत कहौं कुलदीपा॥ जाक हौं अड़तालिस कर्मा। गर्भाधान आदि शुभबर्मा॥ ब्रह्मलोक का सो चलि जावै। औ ब्रह्मत्व सहज में पावै॥ प्रथक् प्रथक् मैं बरणौं ताको। लिखा वृत्तांतवेदमें जाको॥ गर्भाधान पुंसवन जानो। सीमँत जात कर्मशुभ मानो॥ नाम करण अनप्राशन राजै। चौड़ मेखला चौबिधि साजै॥

दो० वेद वृत्त स्नान बिधि और बिवाह प्रमान।
पंच महायज्ञों करै श्राद्ध अष्टका जान॥

सो० पुनः पार्वणश्राद्ध करै सावनी जानिकर।
आग्रहायणीश्राद्ध चैत्री आश्वयुजी शुभ॥

चौ० अनल होत्र अरु दर्शवखानो। पौर्णमास चातुर्मस जानो॥ निरूढ़ पशुबंध सौत्रामनी। अग्निष्ठोम करै शुभधनी॥ अत्यग्निष्ठोम षोड़शी कहिये। बाजपेय अत्रिराजहु लहिये॥ सप्तसोम येहैं संसारा। अष्ट और गुणहैं शुभकारा॥ दयाक्षांति अनुसूया कहिये। अनायास मंगल को लहिये॥ आकार्षण शौचस्पृहा। येगुण अष्टम द्विजकेरहा॥ ताहि खुलासा करिसम झाऊं। हेभूपति मैं तुम्हैं बताऊं॥ गुणीगुणनकोनाहिं छिपावै। निर्गुणकीभी अस्तुति गावै॥ होय प्रसन्न देखिपर

दोषा। मग्न रहै हर्दम शुभभेषा॥ अनुसूया ताको नृप जानो। अब आगेका भेद बखानो॥ मित्र शत्रु मम पर को कहिये। यामें भेद तनुक नहिं लहिये॥ पर दुख देखि करैजो रक्षा। वाको दया कहैं मनस्वक्षा॥

दो० मनोकामना बचन से देय दुःख जो आय।
क्रोध करै नहिं ताहुपर वाही क्षमा कहाय॥

सो० खाय न कबहुं अभक्ष्य रहै न दुर्जन संगमें।
करैअचार स्वदक्ष शौच नाम ताको कहैं॥

चौ० धर्म करै चाहै शुभकारा। वामें होवैकष्ट अपारा॥ ताको त्याजकरै जो कोई। अनायास वाहीको गोई॥ नित्य करै शुभकर्मसुखारी। त्यागै दुष्टकर्मजे भारी॥ वाको मंगल वेद बतावैं। यहि क्रमसे औरो शुभ गावैं॥ जोधन संचय दुःख उठाई। वामें पुण्य करै कछु भाई॥ ताहि अकार्षण नाम बतावैं। यह गुण सब में उत्तम गावैं॥ जो प्रभुकी इच्छाधन मिलही। वहिमें मग्न होयजो रहही॥ करैन आश पराये धनको। ताहि स्पृहा कहै सगुणको॥ ये अष्टम गुण अरु सँस्कारा। जो द्विज इनको तनमें धारा॥ वह पावै ब्रह्मत्व नृपीशा। ब्रह्मलोक का होहिअधीशा॥ जोये कर्म करै मन लाई। वर्णाश्रम धर्महि सिरजाई॥ पावै अवश्य मुक्ति कुलदीपा। सोहम तुमसों कहा महीपा॥

दो० जो याको मनसे पढ़े अथवा सुने सुजान।
सकलकामना देहिं तेहि कृपासिन्धु भगवान॥

सो० पावै उत्तम रूप लक्ष्मी मिलै अघाय कर।

बाढ़ै कीर्त्ति अनूप यश धन सुत बांधव मिलहिं

इतिश्री ज्ञानआभूषणे कृष्णबिहारीशुक्ल बदर्का निवासिबिरचितेसृष्ट्युत्पत्तिवब्राह्मणसंस्कार वर्णनो नाम त्रतीयोंऽशः ॥ ३ ॥

दो० शतानीक अतिहर्षकर बोले मुनिसों बानि।
सँस्कारोंके लक्षणहि कहौदास निजजानि॥
सो० बर्णाश्रमके धर्म ये सबश्रवण कराइये।
और आचमन कर्म कहहु नाथ समुझायकर॥

चौ० बिहँसे मुनिसुनि नृपकी बानी। सुनोभूपमैं कहौं बखानी। गर्भाधान पुंसवन कहिये। जातकर्म सीमंतहु लहिये॥ नामकर्ण अनप्राशन जानो। चौड़ जनेऊ का नृपमानो॥ जो येकर्मकरै द्विजज्ञानी। बीजदोष कीहोवै हानी॥ निवृत होंहि गर्भ के दोखा। हैं येकर्म सबनसो चोखा॥ साध्यायी वृतहोम गनाऊं। महायज्ञ यज्ञहुको नाऊं॥ येइत्यादि कियेसे कर्मा। वृह्मरूप होजाय स्वधर्मा नालच्छेदनके प्रथमाही। जातकर्म होवेशुभ ताही॥ जा सों वेदमंत्र उच्चरिकै। सुबरण शहत और घृत भरिकै॥ बालक को प्राशन करवावै। तापीछे शुभनाम धरावै॥ दशद्वादश अष्टादश माही। अथवा एकमास जबजाही॥ शुभग मुहूर्त्तपरै जब आई। नामकर्णको तबहि धराई॥

दो० धरैशुभगद्विज नामको महासमंगलकारि।
जैसे शिवशर्माशुभग ऐसहि धरैबिचारि॥
सो० क्षत्रियका बलयुक्त जैसे इन्द्रबर्माकहहिं॥

धरैनाम शुभयुक्त अपनीयुक्ति बनायकर।

चौ० बैश्य नाम धनका संयोगी। जैसेधन बर्द्धन है योगी॥ नामशूद्रका बुरारखावै। जैसेसबै दासगोहरावै॥ औ मनु जीने कहा बिचारी। ऐसे नाम धरे अनुसारी॥ द्विजके नाममें शर्मासाजै। क्षत्रीके बर्माशुभ राजै॥ बैश्य नाममें पुष्टिमिलावै। दाससहीत शूद्रको गावै॥ इस्त्रीनाम धरै बड़ज्ञानी। जाकेअर्थ समुझमें आनी॥ दुःखपरै नहिं बोलत जाके। होय सुमंगल सुंदरताके॥ जाकेलेत हृदय सुखपावै। ऐसनाम द्विजताहि धरावै॥ अंतहोइ जेहिके आकारा। अथवा दीर्घहोहि ईकारा॥ द्वादशदिवस बीत जबजावै। अथवा एकमास नगिचावै॥ तादिन बालकबाहरजावे। श्रुतिपुराण यहलोक बतावे॥ षष्टमास जब बीतैंआई। अनप्राशन तबकरै स्वहाई॥

दो० पहिले अथवा तीसरे बर्षप्रयत्न बिचारि।
मुंडन बालकको करैमनुजी कहैं हकारि॥

सो० गर्भ अष्टमा बर्ष ब्राह्मण कोदेवै जनव।
गर्भ बारवेंबर्ष क्षत्रीको पहिरावही॥

चौ० गर्भहोहिं जबद्वादश बर्षा। करैजनव बैश्यनको हर्षा॥ रहैजो ब्रह्मवर्य द्विजभारी। पांचबर्ष काहै अधिकारी॥ करेजो बलकीइच्छाक्षत्रिय। षष्टबर्षमेंहोयपवित्रिय॥ जोधन चाहैबैश्य अपारा। जनव अष्टमें करैभुवारा। ब्राह्मण षोडश बर्षप्रचारी। द्वाबिंश बर्षक्षत्रि की भारी। चतुबिंशबैश्यों केभारी। येगायत्री केअधिकारी॥ जोइनसे पल भरि बढि जावैं। गायत्रीके फल नहिं पावैं॥ ये सब

ब्रात कहावैं भूपा। ब्रातस्तोमकरैं जब दीपा॥ होहिं शुद्ध तब येत्रय बर्णा। तबतक ब्याहनही अधिकर्णा॥ यज्ञोपवीत करैं जब कर्मा। लावैं शुभग तीनअति चर्मा॥ सिंह मृगाबकरेका राजै। ऐसेतीन बस्त्रऔछाजै॥ शणअलसी औभेड़की ऊना। यहि बिधिलावै बर्णांतीना॥

दो० तीनलड़ी की मेखला बरै मूंजकी आय।
ब्राह्मणको पहिराइये यज्ञोपीत बनाय॥

सो० मुरानाम तृणजानि क्षत्रियको पहिराइये।
शण तंतुवपहिंचानि बैश्यपहोंरैजनवसम॥

चौ० जोमेखलाको द्विज बनवावै। एक पंच त्रयग्रंथ लगावै॥ ब्राह्मण सूत कपास जनेऊ। क्षत्रिय शणकापहिरै सोऊ॥ बैश्य भेड़ की ऊन मँगाई। ताको जनवलेय बनवाई॥ ब्राह्मणबिल्व पलास लैआवै। ताहिकाटिशुभ दण्ड बनावै॥ शिरतक ऊंचा धारै सोई। अब क्षत्रियका कहौं बुनोई॥ बड़वा खैर काष्ठ का डंडा। मस्तक तक धारै शुभदंडा॥ पीपर गूलरको लै आवै। बैश्यनाक तक दंड बनावै॥ प्रथम भीषमाता सों लेवै। यामौसी भगिनी तेहि देवै॥ सुवर्ण अन्नरूपकीभिक्षा॥ येदेवं सुंदर शुभ इक्षा॥ सोलै गुरू पास वहजाई। लै आज्ञा बैठेशुभठाई॥ करैआचमनउत्तर मुखको। फिरखावैसुन्दर उसअनको॥ बैठि पूर्ब्ब मुखजो अनखावै। पचै अन्न आयुष बहुपावै॥

दो० दक्षिण यशपश्चिम धनहि उत्तरसत्य प्रमान।
मनलगाय भोजनकरै ताहिदेहिं भगवान॥

चौ० जब भोजन करिहोय सुखारी। फिरिआचमन

करै शुभकारी ॥ संतत करै बिनय शुभ अनकी। जल अस्पर्श करैं इन्द्रिन की॥ खात अन्न जो कहुं चलि जावै। फेरिआय वह भोजन खावै ॥ ताको होय नर्क में बासा। मनु जीने कीन्ह्यों परकासा ॥ याको मैं इतिहास बखानो। पुष्कर द्वीप नगरयक जानो ॥ सतयुगबर्त्तमान शुभराजै। धनबर्द्धन तहँ बैश्य बिराजै ॥ ऋतु ग्रीषम मध्याह्न सोहावा। बैश्यराज तब भोजन खावा ॥ इतनेमें यक शब्द अपारा। बाहर हुआ सुनहु भूवारा ॥ सोसुनि बैश्यचले अधखाये। वहां शब्द को भेद न पाये॥ लौटि आय फिरि भोजन करयऊ। जो कुछ थारीमें रहि गयऊ ॥ खातै मृत्यु भयो भूपाला। पर्‌यो नरक जहँ बिकट कराला ॥ यासों अन्तर खात न करई। नहिं काहू सों बचन उचरई ॥

दो॰ भोजनकरैउछिष्ट जो पावै नरक निदान।
भूत प्रेत ताको ग्रसैं होय अशुद्ध सुजान ॥

सो॰ भोजन करैपवित्र शुचि होकर जो बिप्रबर।
नाशै दुसह कलित्र जावे स्वर्गमहान सो ॥

चौ॰ किंच आचमन करैजो प्रानी। पावै स्वर्ग सकल सुखदानी ॥ हस्त चरण धोवै शुचि पानी। पुनिआसनपर बैठेआनी ॥ अत्युत्तम जहँ भूमि स्वहाई। तहँपर आसन देइ डसाई ॥ उत्तर मुखको बैठे प्रानी। या पूरब मुख करै सुज्ञानी ॥ दहिना हस्तजांघबिच करिकै। दोनों चरण बराबरि धरिकै ॥ बांधि शिखाशीतलजललाकर। करै आचमन बुद्धि उजागर ॥ काम क्रोध शीघ्रता

गनाये। संभाषण औ दंभ जनाये ॥ मलिन बारिया उष्ण जोहोवै। इनको त्यागि आचमन लेवै॥ बसैं चत्व तीरथ द्विज केरे। जे हस्तक में करैं बसेरे॥ तिनके नाम कहौं मैं गाई। सुनहू भूप तुम चित्त लगाई॥ देव तीर्थ सुंदर शुभ राजै। पित्र तीर्थअति शुभग बिराजै॥ प्रजा प्रत्य औ सोम कहाये। चारि तीर्थ बेदनये गाये॥

दो० बासस्थान कहौं तिन्हैं सुनियोचित्तलगाय।
अग्र अँगुलियों के सकलदेवतीर्थ दरशाय॥

सो० पित्र तीर्थको बास रहै तर्जनी के निकट।
औ अँगुष्ठहि पास यह भाष्यो शुभवेदने॥

चौ० मूल कनिष्ठाकी जो होवै। ब्रह्मतीर्थतहँबासकरोवै॥ प्राजापत्य तीर्थ जेहि कहिये। सौम्यतीर्थ को बासहु लहिये॥ बसैं हस्त के मध्यम भागा। यहिबिधि से हमने अनुरागा॥ देव तीर्थ से करैं य कर्मा। पूजैदेव और बलि धर्म्मा॥ तर्पण पिण्डदान जो करई। पित्र तीर्थसे ये अनुसरई॥ करै आचमन जो मनलाई। ब्रह्म तीर्थ से वेद बताई॥ प्राजापत्य और बिधि होमा। सोमपानये तीर्थक कर्मा॥ ये बिवाह के समय बतावै। तीर्थ सहित इनको करवावै॥ सौम्य तीर्थ से ये बतलाये। करै कमंडल ग्रहण स्वहाये॥ दधिप्राशन आदिक शुभ कर्मा। इनको बिधिसे करै स्वधर्मा॥ सब अंगुलि एकत्र करावै। औएकाग्रचित्त ह्वै जावै॥ निर्मल जल लेकर सुखकारी। तीन आचमन करै बिचारी॥

दो० सकल पाप ताके कटैं सुनो भूप जगपाल।

निश्चय जानो भेदनहिं कह्यों वेदका हाल ॥

सो० मनसे पढ़ै सुजान जो याको चितलायकर।
होयतासु कल्यान अन्न धन्नबहु सुखमिलै ॥

इतिश्रीज्ञानआभूषणे कृष्णबिहारीशुक्लबदर्का
निवासिबिरचितेब्राह्मणसंस्कारवआचमन
बिधानबर्णनोनामचतुर्थोंऽशः ॥ ४ ॥

दो० अतिआनँदलहिनृपतिमन सुनिआचमनबिधान।
बोलेमुनिसों बिनयकरि अति मृदुबचनसुजान ॥

चौ० जोमोपर मुनिहौ अनुकूला। कथा कहौ तौसुख की मूला ॥ जेहि बिधि जीव उदर में आवै। गर्भबास दुख जेहि बिधिपावै ॥ उदर मांझ क्या भक्षण करई। कौन कर्मसे सद्गति मिलई ॥ सो समुझाय कहौ मुनिज्ञानी। अति अभिलाष सुनन की बानी ॥ बोले मुनि सुनु नृप चितलाई। कहौं कथा अति परम स्वहाई ॥ जो पूरुब श्रीकृष्णसुनायो। सुनत युधिष्ठिर अति मुदपायो॥ सोइ कथा हम कहैं स्वहावन। अत्युत्तम दुखदूरि करावन ॥ करै जीव जो उत्तम कर्म। पावै देव योनि नहिं भर्म ॥ मिश्रकर्मसे मानुष योनी। तिर्यक् योनि अशुभ से होनी ॥ पापसे पाप योनिमें जावै। पुण्यसे पुण्ययोनि जिवपावै ॥

छं० ऋतुकालमें निर्दोष शुक्र सुबायु करके प्रेरिता।
एकता को प्राप्तहोता सन्धिहोकर शोणिता ॥ शुक्रकेसाथहि सुकर्मो करके प्रेरित जीवभी। योनिमें प्राबिष्टहोता

मूल परती है तभी ॥ एक दिनमें शुक्र शोणित सन्धि मिलकर कललहवै। पांच रैनि में कलल बुद्बुद रूपहवै जाताहै स्वै ॥ सात रैनिमें बुद्बुदाकी मांस पेशीबनति है। चत्वदश दिन माँसपेशी ल्वहु मांसमिलि दृढ़ होति है ॥ पच्चीस बासर बादि उस पेशी में अंकुर जमतिहैं। यक मांस में उस अंकुरोंके पँच भाग ह्वै ह्वै कढ़तिहैं॥ चत्व मासहि अंकुरोंके भाग अंगुली बन्ति हैं। पँचमास में नाशिका मुखकर्णाई सब ठन्तिहैं॥ षष्ट मासमें दंतन-ख औकर्ण बिच छिदहोति हैं। सप्त मासहि लिंग गुदा या योनि नाभी बनति है ॥ अंगमें संकोचभी वहि तबहि से होआत है। अष्ट मासमें अंग प्रत्यंगसंपूर्ण होजातहै॥

दो० शिरमें केश निकल्तिहैं औमाता जो खाय।
वाको रस नाभी डगर बालक देंह समाय॥
पोषण होवै उसीसे गर्भ स्थित जो जीव।
यह बिचार मनमेंकरै लीन्ह्योजन्म अतीव॥

सो० बार बार भै मृत्यु अब मैं जन्मतही मही।
पुनिभू बंधनप्राप्त्यु करै अनेक बिचार अस॥
शोचै मोक्ष उपाय अति दुक्खितह्वै गर्भमें।
ज्यों मेरुतरदबिजाय तसदुखहोवै बिष्टसे॥

स० ज्योंदुख डूबत बारिधमें परै त्यों दुखगर्भके बा-रिसे पावै। ज्यों दुखलोह तपाके छुये परै त्यों दुख पेट कि अग्नि तपावै॥ ज्यों दुख तप्त सुई कुचने परै अष्ट गुणा त्यहि गर्भ में आवै। कोटि गुणा अधिकी दुखगर्भ से जन्मत योनि कि पीड़ सतावै॥

दो० इस दुखसे बेसुधपरै बड़ा कष्ट यहपाय।
जैसें तिलकोल्हू परेनिःरसङ्क गिरि जाय॥
ऐसहि बदन निसत्व हो महा दुखकोपाय।
योनि यंत्र के पीड़से भूमि त्वर्त्त गिरिजाय॥

पवंगम छंद॥

मुखबर्णजिसका द्वारहैं। अरु युग्म ओष्ठ कपाटहैं॥
इंद्रिया सबहि झरूखहैं। यहि भांति देहस्वरूपहैं॥

दो० दँतजिह्वा गल बात पित जराकाम शोकाहि।
राग द्वेषतृष्णारिसा आदि उपकरण जाहि॥

क० ऐसा यहदेह रूप है अनित्य गेहनित्य आत्मा को बास अस्थान इदम् द्याहहै। सकल शरीर शुक्र शोणित से उपजत नित्यहि यह बिष्ट मूत्र आदिसो भरारहै। है अपबित्र अत्यंत कहिजात नहिं कबहूंन पाक होत नर्क रूप बास है। जिस प्रकार बिष्टा से घट भरा अपबित्र तैसही यह देहरूप अतिही खराब है॥

दो० जिसमें माखन मीसरी खाने से मलहोय।
ऐसी देह खराब है प्यार करो जनि कोय॥
भजौ रामकोचित्त से सकलकाम बिसराय।
जासोंसद्गतिमिलैगी बिष्णुलोक दरशाय॥
जब बालक जन्मैमही लागत पवन झकोर।
पूर्व जन्म को स्मरण भूलिजाय वहिठौर॥

सो० अति दुखपावै तास काटहिं कीट पतंगजो।
होहिनबचनप्रकासअतिव्याकुलनित्यहिरहै॥

दो० दंत ऊगने के समय अति दुख पावै ताहि।

भांति भांतिके रोगसों पीड़ित रहै सदाहि ॥

चौ० मोहसे बालक बिष्टा खावै। कर्ण छेदमें अति दुख पावै ॥ युवा अवस्था आवै जबहीं। पावै सुख नहिं नेकौ तबहीं ॥ उपजै ईर्षा बहुत प्रकारा। अधिक सतावै काम पियारा ॥ निशा नींद नहिं नेकौ पड़ती। दिन को धनकी चिंता बढ़ती ॥ रमै जो परनारी के साथहि। अति दुख पावै होत बुढ़ापहि ॥ लागै कँपन शरीर दुखारी। सब अँगजर्जरहोहिं खुवारी ॥ पुत्र बधूत्यहि कहा न करहीं। अतिदुख तासु समयमें लहहीं ॥ कोई कर्म होहिं नहिं सिद्धा। पछितावै तब अधिकहु वृद्धा ॥ होहिं बात पित कफ अधिकारी। बाढ़ै रोग अनेक प्रकारी ॥ सकलरोग काहै घरदेहा। पुनि कैसे होवै सुखतेहा ॥

दो० यक शत यक मृत्यु देहके हैं ये सुनो भुवाल।
उनमें यकहै काल मृत्यु शतमृत्युहि आकाल ॥
कालमृत्यु जब आवही निश्चय छूटैं प्रान।
चहै यत्न कोटिन करै होइ न त्यहि कल्यान ॥

चौ० मृत्युसमान आन नहिं दुखहै। अतिही कष्ट परत तेहि क्षणहै ॥ हेमाता हेपिता पियारे। हेभाई सकुटुम्ब हमारे ॥ अतिही दुख होवै नरकाहीं। हाथ पैर पटकै खटमाहीं ॥ घुरुघुरु शब्द कंठमें होवै। यहिबिधि मृत्युकाल नर पोवै ॥ है यह देंह अतिहि दुखकारी। घोरनरकमें डारनहारी ॥ यासों भजौ रामका नामा। छोंड़ि मोह दँभ आदिक कामा ॥ जासों स्वर्ग मिलै हर्षाई। करहु ताहि सबकाम बिहाई ॥

दो० आदि अन्त औ मध्यमें दुखही मिलै सदाहि।
बहुतखाव तो दुख मिलै सूक्ष्म खाव दुखताहि॥
सब रोगों से श्रेष्ठ है जाको क्षुधा कहाहि।
इसको औषध अन्न है सुखका साधन नाहि॥
होत भोर मलमूत्र की लागत बाधा ताहि।
मध्य क्षुधा तृष्णा बढ़ै अति दुखदायक जाहि॥

चौ० भरै पेट जब अनको खाई। बाढ़ै काम बिथा तब आई॥ रैनि नींद देवै दुख अधिकहि। दिन धन संपादनदुख बहुतहि॥ संपादन धनकी जो रक्षा। तामें दुख अतिहोहिं प्रत्यक्षा॥ पुनि व्ययकरने में दुख होवै। यासों धन सुख कबहुं न देवै॥ चोर अग्नि राजा जल इनसे। पावै धनवाला दुख तिनसे॥ ज्यहि बिधि मांस अकाशहि फैंकै। पक्षी खायँ चोंचमें लैकै॥ भूमि देहु जो मांस चलाई। खावैं श्वान गिद्ध हरषाई॥ जल में परै मत्स्य त्यहि खावै। ऐसहि धनवाला दुखपावै॥ हेमँतऋतुमें शीत सतावै। ग्रीषममें गरमी बहु पावै॥ बर्षामें बर्षा भयदायी। यासों काल नहीं सुखदायी॥

दो० आदि अन्त पर्य्यन्त तक रहै दुखी यह देह।
फँसि नर मायाजालमें अति दुःस्सह दुखलेह॥
यासों जो ब्रह्मचर्यरहि करत बरत उपवास।
अतुलसुःख भूमें लहै अन्त स्वर्गकी आस॥

इतिश्रीज्ञानआभूषणे कृष्णबिहारीशुक्लबदर्का
निवासिबिरचितेगर्भबासदुःखबर्णनो
नामपंचमोंऽशः॥ ५॥

दो० पियतपियतयहमधुररस तृप्तहोहिंनहिंगात।
याते कथा स्वहावनी और कहौ विख्यात॥
सो० बिहँसे मुनिसुनिबैन बोले अमृत बचनप्रिय।
सुनहु भूप सुखदैन कथा कहौं अनपावनी॥

चौ० ज्यहि प्रथमहि श्रीकृष्ण बखानो। सुनत युधिष्ठिर अति सुखमानो॥ सोइ कथा मैं कहौं स्वहाई। सुनहु भूप तुम निज चितलाई॥ बोले हर्षि युधिष्ठिर राजा। सुनहु कृष्ण स्वामी महराजा॥ बर्णाश्रम के धर्म सोहाये। सोतुम हमसों कहौ बनाये॥ बोले कृष्ण हर्षयुत बानी। सुनहु युधिष्ठिर कहौं बखानी॥ सबसों मूल आचरण जानो। सत्यसत्य तुम करौ प्रमानो॥ हीन आचरण होइ जो कोई। नरक बास वह पावै सोई॥ एक आचरणधर्म कहावैं। और लोगमिथ्या सब गावैं॥ आचारहि कुल श्रेष्ठ कहावै। बिना आचरण दुख बहुपावै॥ बोले धर्मध्वज सुखमानी। नाथआचरण कहौ बखानी॥ सुनहु भूप तुम चित्तलगाई। हमआचरण कहैं शुभगाई॥ ब्राह्मयमुहूर्त जानि जबपावै। तब उठि धर्म अर्थ चितलावै॥ करै आचमन चित्तलगाई। प्रातःसन्ध्या मौन कराई॥ अस्ताचल देखै रबिनाहीं। दीर्घ आयु होवै शुभताहीं॥ जोनहिं संध्या शाम सकारे। करै स्व शूद्रकर्म गुणभारे॥ दिवस उत्तरा मुख मलत्यागहि। रैनि दक्षिणा मुखमल छाड़हि॥ आच्छादित भुव करि जब लेवै। शिरमें बस्त्रबांधि सुखदेवै॥ मल त्यागै तबहीं नरज्ञाना। मानो सत्य प्रमान बखाना॥ तीरथ

थग्रामगोष्ठक्षेत्रादिक।इनमेंशौच मनेमनुजादिक। जलभी तरमूषकके बिलसे।बेंबउरि आदिकहौंजेहितसे ॥ इनकी मिट्टी अशुध प्रमानै।शौचकर्म केहितनहिं आनै॥शौचकर्मजब करैमहाना। अधिक मृत्तिकालेइ प्रमाना ॥ देवार्च्चन औ भोजन जानो। करि आचमन आदि ये ठानो॥ हैं बिद्वान पुरुषजे धर्मा। धन उपराजैं करि शुभकर्मा॥ अर्थधर्म अरु काम स्वहाये। साधन सदाकरैं मनलाये॥ इनके साधन से सुख पावैं। अणिमादिक सिद्धी बहु आवैं॥ होय द्रव्यजो प्राप्त सुजाना चतुर्थांस परलोक लगाना॥ चतुर्थांस संचय करि राखैं। अर्द्धभाग अपना शुभचाखैं॥ ऐसोकर्म करैजोभाई। धर्मादिक सिधहोहिं सोहाई॥ केश प्रसाधन औ दँतधावन। दर्श देव पूजन मनभावन॥ आदि करै मध्याह्न सुजाना। सुनहु भूप हम और बखाना॥ सेवै अग्नि दूरिसे आई। मुत्र पुरीष दूरिको जाई॥ ताकोसुख अतिहोय अपारा। कहैं परम यह रहस उदारा॥ ढेला मर्दन करै जो कोई। तृणटूरै बैठेमा सोई॥ काटै नहु दांतन सों दाबी। रहै उछिष्ट भोज्य को चाबी॥ अल्पआयु ताकी ह्वै जावै। श्रुतिपुराण यहलोक बतावै॥ नंगी पर इस्त्री जो देखै। अथवा अपनी बिष्टापेखै॥ रजस्वला से भाषैजाई। अथवा दर्शस्पर्श कराई॥ जलके बीचि मूत्र को त्यागै। या मैथुनको मन अनुरागै। इतने कर्म करै जो कोई॥ दुख दुगुना का तिगुना होई। भोजन करैन फूटेपात्रा। खोलि केशनहिं खावै ज्ञात्रा॥ बर्जित नंगेमेंअरनाना।

नग्न उछिष्ट शयन नहिं जाना ॥ रहै उछिष्ट हस्त जब ताई। शिर अस्पर्श करै नहिं भाई ॥ शिरमेंकरै प्रहार न कबहूं। हैराजा सब काशिर गनहूं ॥ पुत्रशिष्य को नीति पढ़ावै। तब शिरको बर्जिनहिं गावै ॥ युग्म हस्त शिर नाहिं खुजावै । बिन कारण शिरन्हान न लावै ॥गृहण बिनानिशि करै न न्हाना। भोजन खायकरै नहिस्नाना ॥ गहिरजलाशयमें न नहावै। शिरस्नान करि तैलबरावै ॥ तिलपिष्ठा कबहूं नहिंखावै। वाकी आयुष क्षयनहिं पावै ॥ गुरुको दुष्कृत कबहुं न भाखै । सदा धर्मको साधन राखै ॥ परनिंदा नहिंकरै सुजाना। निंदा होतसुनै नहिंकाना ॥ नयेबस्त्र पहिरै सुखदाये । उत्तम औषध पानकराये॥ राखैकेश हमेसाचिकने। मैल बिहीन रहै तन अपने॥ रहै सुगंध देह लपटाये। हर्दम उत्तम भेष बनाये ॥ श्वेतपुष्य धारणनृप करई। किंचितबस्त्र हरैनहिंपरई ॥ अप्रिय बचन कबहुं नहिंबोलै। असत्य बचन प्रियहोय न खोले ॥ बोलैझूंठ न बात बनाई। रहै सदा यासोंअलगाई । क्षिद्र आनके कबहुंन खोलै। दुष्टभाव कबहूंनहिं बोलै ॥

इतिश्रीज्ञान आभूषणेकृष्णबिहारीशुक्लबदर्का निवासिबिरचेसदाचारधर्मप्रकाशवर्णनोनामषष्टमोंऽशः ॥ ६ ॥

दो० उद्वेषीउन्मतपतित व्यभिचारिणिअतिमत्त ॥
कुलटापति क्रोधीहठी इनसेकरै न हित्त ॥

क० खोदैनाहिं नासिका वसांस मुंह ओढ़ाय लेवैहँसे नाहिं ऊचेस्वर न त्यागे बायु शब्दमें। श्मशान उपबन औ वृक्षछाया चातुरपथ इनमें नजावै रैनिधुबघट कुशब्दमें। दुष्टको बरावै ग्रीष्म छुतुरी लगावैशुभरात्रि लष्ठ थाँभै दंडधारै बन चलब्दमें। बिनापायँ जूता न जावैद्वार बारबार केश अस्थिकांटभस्मपरसैना भुवब्दमें॥

छ० ब्राह्मण भूपबिद्वान गर्भिणी गोउनमत्ता।
मूकअंध अरुबधिर मत्तइस्त्री शुभवन्ता॥
लादे बोझ मजूर जो येते आवैं आगे।
तिन्हें रास्तादेहि आदिउनके बिनमागे॥

दो० जूता कपड़ा जानिये मालापुष्यबखानि।
धारण नहिंइतने करै दूसरके उतरानि॥
बचैसदा परनारिसे महा नष्ट यह कर्म।
आयुक्षीण होवैबहुत नष्टहोय सबधर्म॥

चौ० इस्त्री रक्षाकरै भुवारा। करै न ईर्षा दोष बिचारा॥ घटै ईर्षासे बयभाई। यासों इर्षा सदा बचाई॥ ब्यसनी मूर्ख कुरूप बखाने। उन्मत्त मायाबी जाने॥ हीनअंग अधिकांग बखाने। इनको दानदेहि नहिंजाने॥ किन्तु अन्नजल देवै इनको। और नहीं पूछै कुछ हित को॥ अर्द्धरात्रि नहिं भोजन करई। होकर खड़ा कबौ नहिं पढ़ई॥ बहुत हास्य नहिंकरै अनैठे। पैर से आसन ऐंचि न बैठे॥ ब्राह्मण क्षत्री सर्प गनाये। इनसों बैर करै नहिं भाये॥ येतीनों हैं तुल्य सुखारी। बदला लेहिंय दांव बिचारी॥ सायं प्रातःकाल बखाने। इनमें

गमन करै न अजाने ॥ होहिं अपरचित जो नरनारी। बर्जित गमन तासुसँग भारी ॥ औ परिचित जो होहिं मनुष्या। तिनके आगे चलैन स्वइच्या ॥ आन मर्म नहिं करै स्पर्शा। क्रूरबचन नहिं बोलै हर्षा ॥ होय निकृष्ट पुरुष जो कोई। वासों वेदन पढ़े बनोई ॥ जिस बाणी से आन उद्वेगा। कहै नहीं वह बचन अयोगा ॥ अलक्ष्मी बाणी वह जानों। नरक देनको है पस्थानो ॥ बचन रूपये बाणकहावैं। जिनके लगत चैन नहिं पावैं॥ राजि दिवस शोचै मनलाई। मर्मबाण जब लागैंआई ॥ शस्त्रलाग चाहै भरिआवै। पैयेबाण घाव करिजावै ॥ यासों ज्ञानवान जो होई। इन बाणन नहिं मारीसोई॥ नास्तिकत्व अरु वेदकि निंदा। द्वैसस्तंभ अभिमान मलिन्दा ॥ क्रूरस्वभाव वेदका कुत्सन। इनको त्यागै सदा प्रत्यक्षन ॥ तारागण नहिं आन देखावै। द्विज निन्दाको बहुत बचावै ॥ आदिपक्षकी तिथि नहिंभाखै। यहतिथि आयुष कमती राखै ॥ अकस्मात छींकै नर कोई। सो निष्ठीवन करै सचोई ॥ लेय उसांसी बस्तर पहिरै। करै आचमन अंजुलि गहिरै ॥ बसै जहां शुभ राजा होई। नीति कर्मजो करै सचोई ॥ दर्पण मलिन नदेखै चेहरा। निशिनहिं करै तासु सन हेरा ॥ इससे आयुष अति घटिजावै। सर्वस्मृति यहि मनै करावै ॥

दो० भोजन करैन प्रीतिसे घर सुनारके जाय।
नहिंताकोबिश्वासकरि रहैतासुघरछाय ॥
फूटा पात्र निकारिये टूटी खाट बहाव।

कुक्कुट श्वान निकारिकै घरसे दूरकराव ॥

चौ० कटवृक्षको देहुनिकारी। ये घरमें नहिं राखु सुखारी ॥ फूटपात्र जाकेघर होई। कलह विरोध बढ़ी अतिसोई ॥ टूटी खाट होयजो घर्म्मा। बाहन को क्षय करै अधर्म्मा ॥ कुक्कुट श्वान रहैजो छाई। ताघर पितर भोज्यनहिं पाई ॥ कंटकवृक्ष होहिंजो धामा। आयपिशाच बसतिहैं तामा॥ बिन अस्नान कियेजो खावै। मानो मलको भक्ष्य पचावै ॥ पंचयज्ञ बिन भोजन करई। मानों उदर रुधिरसों भरई॥ असंस्कृत अनमूत्र समाना नहिं खावै यह कहौं प्रमाना ॥ सुवासिनी गर्भिणी गनाई। रोगी बालक वृद्ध जनाई ॥ प्रथमहिं इनको देय खवाई। पीछे आपखाय सुखदाई ॥ भोजन करत आनजो आवै। निजखावै वाको न खिलावै ॥ मानहुं पापक करै अहारा। यासों यह बर्जित है सारा ॥ उत्तर मुखह्वै भोजन खावै। अथवा पूरब मुखह्वै जावै ॥ह्वै प्रसन्न अति भोजन करई। इतनी बात और नहिं धरई॥ दुष्ट पुरुष का लाया अन्ना। और जुगुप्सित होय जो धन्ना ॥ असंस्कृत उच्छिष्टगनावै। इनको त्यागि और सबखावै ॥

दो० बहुत नरोंके बीचते जोतुरतै चलिआय।
अथवा व्याकुल क्रोधसे सोक्षणभोज्य नखाय ॥

चौ० बिनापात्र नहिं भोजन करै। फूटेपात्र बारि नहिंधरै ॥ उत्तम पात्र एकाग्रहि चित्ता। तब भोजन में होहिं पबित्ता ॥ आदि मिष्ठ शुभभोजन खावै। पुनःअ-

म्लकटु तिक्त पचावै॥ तापीछे पुनि कोमल खावै। यहि बिधि तो पुराण शुभ गावै॥ दिनमें अम्ल बीचतुम जानो। रात्रि दही सत्तूके मानो॥ सर्बकाल कोविदर के माहीं। बसै अलक्ष्मी खायो नाहीं॥ भोजन समय न निंदै अनको। मौन पूर्ब्बक खावै हव्य को॥ करि भोजन जबबाहेरआवै। पैर धोय बीराको खावै॥ फेरै हस्त उदर पर नीके। इन नामोंको सुमिरण करिके॥ कुम्भकर्ण बड़वानल जानो। भीम अगस्त शनिश्चरमानो॥

दो० आवै सायंकाल जो अतिथि द्वारपै भूप।
भोजनजलसत्कारकरिशय्यादेयअनूप॥

चौ० आपहु सोवै उत्तमसेजा। कीर न जामें होंय अमेजा॥ कोमल बिछा बिछौना राजै। ऊंची नीची खाट न साजै॥ सोवै मुख पूरुबको ह्वैकै। अववा मुख दक्षिण को कैकै॥ अन्त दिशाजो सोवै कोई। कछुक दिसमें रोगीहोई॥ जल औ अग्नि साथ नहिं धारै। द्विज गुरु ओर न पांव पसारै॥ अंजुलि से जल पीवै नाहीं। आंधि धूपसे बचै सदाहीं॥ पुरुष बंधुके दुख सबहरई। भय युतको रक्षन बहु करई॥ सदा चारमें रहै हमेशा। बसै सदा उत्तम शुभदेशा॥ वृथा मास नहिं भक्षणकरई। दंभ बिवाद चित्त नहिं धरई॥ मांस कृसिर शष्कुलि अरुपायस। अपने हित नहिं खायबनायस॥ लै देवता को नाम बनावै। भोग लगाय आप शुभखावै॥ रक्तपुष्प नहिं धारण करै। कुबलय कमल आदि पहिरै॥ भोजन शयन देवकी पूजा। इनमें बस्त्र पहिरै दूजा॥

दो० पिप्पलबटऔ लकुचकै औ गूलररको जानि।
इनके फल खावैनहीं पुत्र वृद्धकी हानि॥
पतितमनुष्यसंसर्ग नहिं करैकबहुं अनजान॥
वृद्ध दरिद्री मित्रको घरमें देअस्थान॥
इनके रहनेसे सदा होहि वृद्धिकी माहिं।
मैनाशुक पारावती रक्खै धाम सदाहिं॥
छुच्छूंदरि चिन्गुद्दरहि घरसे देय निकारि।
बकरा चंदन बैलको रक्खे सदा निहारि॥
बीणादर्पणघृतशहतऔजल अग्निबखानि।
ये घरमें राखै सदा लक्ष्मीके हैं खानि॥
बारण रथ औ अश्वपै चढ़ सदा निरधारि।
बर्णेयोंयहश्रीकृष्णप्रभु उत्तमज्ञान बिचारि।

चौ० सुनत युधिष्ठिर हर्षित भयऊ। वही कथा तुमसों हम कहेऊ॥ शतानीक सुनिअति सुखपाये। सजल नयन मोदनसों छाये॥

दो० सोई कथा स्वहावनी कृष्णबिहारी पाय।
मत्यऽनुसार प्रकाश किय भाषा पद्य बनाय॥

इतिश्रीज्ञानआभूषणेकृष्णबिहारीशुक्लबदर्का
निवासिबिरचितेसदाचारज्ञानप्रकाश
बर्णनोनामसप्तमोऽशः॥ ७॥

इतिआदिखंडसमाप्तम्॥

श्री हरिशरणम् ॥

ज्ञानआभूषण ॥

द्वितीयखंडप्रारम्भः ॥

सो० दियेभाल सिंदूर एकदंत करिवर बदन ।
है बाहन इंदूर भजौंआदि गिरिजा नँदन ॥

चौ० प्रभु लीलाकछु बरणि न जाई । मति अनुसार कहौं कछुगाई ॥ ज्यहि बिधिबिष्णुधरे अवतारा । सकल भूमिको भार उतारा ॥ सोकछु चरित्र कहौं मैं गाई । हिये सुमिरि श्रीपति रघुराई ॥ सत्ययुग बिष्णुचारि अवतारा । मच्छ कच्छ बाराह उदारा ॥ औरनृसिंह धर्‌यो तापाछे । अबत्रेताको बर्णोंआछे ॥ त्रेता विष्णुतीन अवतारा । सुरद्विज संतनके हितकारा ॥ परशुराम बामन गुणगाय । रामरूप दशरथ गृहजाये ॥ द्वापरे बिष्णु दोय अवतारा । कृष्ण बौद्धये कहों बिचारा ॥ कलियुग विष्णु एक अवतारा । कलकी नाम बिदित संसारा ॥ जब २ परै भूमिपर भारा । तब २ लेहिंविष्णु अवतारा ॥ होहिं राक्षस अतिदुख कारी । त्रासैं प्रजा महाभयमारी ॥ जबहिं दुष्टराक्षसकरि पापू । सुरद्विजसन्तनदेहिंसंतापू ॥ तबहिं बिष्णु लेवैं अवतारा । दुष्टन मारि करैं संहारा ॥

हरिजोलीन बराह स्वरूपा। ताको मैं बर्णौं सुखरूपा॥
जबब्रह्मा सोये निशि जानी। सकल स्टष्टिकी भैतबहानी॥
तासुज्योति सबकै इकठाई। नारायण मुखगई समाई॥
तबप्रभु ध्यानकियो अनुरागे। देखाधरा बारिमें पागे॥
शयन कियेबिधि शुभ निशिजानी सकल सृष्टि पूरितहै पानी॥ त्वरितरूप शूकर करलीन्हा। जल प्रवेश नारायणकीन्हा॥ लैबुड्डी प्रभुगयो पताला। भेदि रसातल सुतल बिताला॥ देखापृथ्वी परीमहाना। अतिदुखयुक्त नजाय बखाना॥ पृथ्वी पहिंचान्यो जग स्वामी। परि चरणन असकियो नमामी॥

हरिगीतिकाछन्द॥

जय जयति राघव रूपसुन्दर दुष्टदाहन केशवम्। जयबिश्व नाथ कृपाल बिष्णो बिश्व पालबिश्वम्भरम्। जय ब्रह्म शक्ति सुरेश रामः रावणादि बिदारणम्। निज जनन हितयह रूपधार्यो जय कृपाल बराहणम्। अब करहु नाथ सनाथ मोकहँ बिश्व कर्ता सुंदरम्। जय सूर्य चन्द्र अकाश कर्ता आपहीके भूषणम्। जयराम लक्ष्मी सहित बन्दौं सकल जगके कारणम्। निज जननहितयह रूपधार्यो जय कृपाल बराहणम्॥

सो० अस्तुति सुनिबाराह घुड़क्यो शब्द अथाहकरि।
धरादाबि मुखमाहँ लैनिकस्यो एकपुष्प सम॥

दो० देखि धरणि जनलोक सब दुन्दुभि दईबजाय।
लागे अस्तुति करन सब श्रीबराह गुण गाय॥

चौ० करहुक्रोध अबशांति बराहा। धरहु धरणिसुंदर

शुभगाहा॥ हरषेसुनि मुनिगणकी बानी। धर्योधराजल ऊपर ठानी॥ पुनिनिज रूपबिष्णु प्रभुलीन्हा। सकल जगतको आनँद दीन्हा॥

दो० रूप धर्यो प्रभु मच्छको सोअब कहौं बखानि।
पढ़िसज्जन हियहर्ष करिपियहु मधुररस मानि॥
शंखासुर एक दैत्य भो बर दानी सुर केर।
जलधि तनयअति बलीवहजीतेसि भुजबलटेर॥

सो० सकल धराको जीति इन्द्रासन परचढ़ि गयो।
कीन्हो युद्धअदीत महाबली कहिजात नहिं॥

चौ० करिके युद्धमहा भटभारी। लैगयो वेदउठाय हंकारी॥ सोलैजलधि माहँतेहि बोरेसि। फेरिसैनअगणित तहँ जोरेसि॥ लैकर सेन चला हंकारी। जीत्यसि बहुसुर हांकि प्रचारी॥ यहिबिधि सदा करै अन्यावा। तब सुर सब मिलि भेद बनावा॥ सकल देव मिलि शुभ मतकैकै। गये बिष्णुके धामहिं मिलिकै॥ अस्तुति करन लगे सब मिलिकै। तब नारायण बोले हँसिकै॥ अतिप्रसन्न हमतुम पर भेहैं। जोमांगो सो तुरतै देहैं॥ तब सबसुर बोले हर्षाई। नाथअनीति कही नहिंजाई॥ जलधि तनय शंखा सुरजानो। भयो दैत्य इक बलीप्रमानो॥ सकल धरासो जीत्यसि आई। अति बलिष्ट कछु बरणि न जाई॥ लैगयो वेद बाहुबर जोरा। सो लैजाय जलधि में बोरा॥ ताको आप करो संहारा। अरु काहूसे मरै न मारा॥ सुनि प्रभु बिहँसि कह्यो सुर पाहीं। मारब ताहि बिलँब कछु नाहीं॥ सकल

जाहु अपने स्थाना। हम समुद्र का करब पयाना॥ सुनत देव स्तुति तब कर कर। आये अपने सब सुर घर घर॥ अति कृपाल सुन्दर रघुराई। भक्त बछल मुनि जन सुखदाई॥

कुण्डलिया

धरि मत्स्यक अवतार प्रभु गयो समुद्र मझार। ढूंढ़ि ताहि तुर्तै लियो श्रीपतिराम उदार॥ श्रीपति राम उदारतुर्त शंखासुर मार्‌यो। सकल जनन हितकार सुरन के दुख सब टार्‌यो॥ लैकर वेदप्रचारि कियो रूपहि धरि मत्स्यक। रहे सदा भगवानबिप्रगो भक्तन रक्षक॥

दो० मत्स्यरूपको छोड़िपुनि प्रभु भयो अन्तर्द्धान।
कथा बिदितयहजगरही ताको कियो बखान॥
जो याको मनसे पढ़ै अथवा सुनै सुजान।
चारि पदारथ मिलहिं ते पुरवहिं श्रीभगवान॥

इतिश्रीज्ञानआभूषणेकृष्णबिहारीशुक्लबदकानिवाशिबिरचितेबाराहवमत्स्यअवतारकथा वर्णनोनामप्रथमोंऽशः॥ १॥

दो० कहौंकथा अब कच्छकी सुनहु सुजन दैकान।
ज्यहिबिधिलैअवतार प्रभुमथ्यो सिंधु सुखदान॥
दैत्यबढ़े जब भूमिपै करैं अनित्य महान।
अन्नधन्न जो धरणिपरहर्‌यो सकलदुखदान॥

क० करत अनीति चहुंदिशि दैत्य घूमि घूमि तब सुर सर्वमिलि मंत्र एक ठानिकै। गयेजहँ केशव कृपा-

निधान दीनबन्धु पाणि जोरि शीशनाय बिनती सुनाय कै। बोले प्रभु हँसि कहो देव सर्ब प्राणपिय कौन हेतआयो सो सुनावो गुण गाय कै। अति हर्षाय बोले देववृंद सब मिलि नाथ जेहि काज आये सो कहैं बखानिकै॥

तोमरछन्द॥

दैत्यजे बलवान। नहिं डरत कालहु जान।
हरिलियो सब धनधान। जोहोहि पैदाआन॥
दो० ताकोकरो बिचार प्रभु जेहिबिधिदुखसबजाय।
सकल प्रजा आनंदकरि बसै कष्ट बिसराय॥
हँसिबोले प्रभु प्राणपति मति ऊबौ सबदेव।
सकल बिघ्न जेहिबिधिहरैं सोइकरबहमभेव॥
तुम दैत्यन सों प्रीतिकरि रमौजलधिपै जाय।
कच्छरूप तहँधारिकै मथब सिन्धु हम आय॥
वासों निकरी सुधारस और औषधी आय।
जाके पानकिये सुभग अजर अमर ह्वै जाय॥
सुनत बचनप्रभुको बिहँसि सकल देवताजाय।
सिन्धु समीप निवास करिरहे मोद उरछाय॥
तब श्रीपति भगवानने लियो कच्छ अवतार।
सकल चराचर देवके हर्‌यो दुःखको भार॥
सो० मथ्योसिंधु अरगाय चौदह रत्न निकारिलिय।
मणिरंभा सुखदाय धन्वंतरि अरुकल्प तरु॥
अमीशंख गजराजि शशिधन्वा अरु बारुणी।
कामधेनुशुभबाजिकौस्तुभमणिपुनिबिषप्रगट॥

चौ० कच्छप रूप छोंड़ि सुखदाई। बिष्णुरूप ह्वै प्रगट्यो आई॥ यथायोग्य बिधि सबको दीन्हां। आपु ग्रहण लक्ष्मीको कीन्हां॥ पुनः भयो प्रभु अन्तर्द्धाना। सहित लक्ष्मी कृपा निधाना॥ निज निज थान देव सब आई। ह्वै प्रसन्न दुंदुभी बजाई॥ यहि बिधि धरत बिष्णु अवतारा। सकल जगत के प्राण अधारा॥ अति कृपाल संतन सुख दाई। प्रभु लीला कछु बरणि न जाई॥ जो पढ़ि है याको चितलाई। विष्णु कृपा धनलक्ष्मीपाई॥अन्तकाल सुरपुरमहँगेहा॥ या महँनहिं तन को संदेहा॥

इतिश्रीज्ञानआभूषणेकृष्णबिहारीशुक्लबदर्का निवासिबिरचितेकच्छअवतारकथावर्णनो नामद्वितीयोंऽशः॥ २॥

दो० बहुरिकहौंअवतारप्रभु जेहिबिधिलीन्होंआय।
जन प्रह्लाद उबारेहु नरहरि रूप बनाय॥

चौ० हिरण्य कशिपु जो निश्चर राजा। करै अखंडित राज्य बिराजा॥ यकदिन अमरपुरी चढ़ि गयऊ। घोर युद्ध देवन सों भयऊ॥ हारिमानि पुनि भूपर आवा। लज्जित बदन नयन जल छावा॥ राज्य पाटि को काम बिसारी। नींदत्यागि अतिभयो दुखारी॥ बिगत रैनि कुमुदन कुम्हिलाना। उठि निश्चर बनकियो पयाना॥ एक चरण ह्वै ठाढ़ सुरारी। बनफल खाय कियोतप भारी॥ कछुक दिवश तरुपात्रहि खाये। रहा

ब्रह्मको ध्यान लगाये॥ यहिबिधि बहुत बर्ष तपकीन्हां। ह्वै प्रसन्न ब्रह्मांबर दीन्हां॥ जो मांगो सो देहुं सुरारी मोहित कठिन कियो तपभारी॥ सुनि निश्चर बोला हर्षाई। जो प्रसन्न तो होहु सहाई॥ यहबर देहु मोहिं लघुजानी। कौनिउ बिधिसों होहुंन हानी॥ नर अरु देव चराचरजेते। सिद्धक चारण गुह्यक तेते॥ इनकेहाथ होहि बधनाहीं। पृथ्वी आसमान के माहीं॥ रैनि दिवस अरुभीतर बाहर। कौनिउ बिधि नहिं होहि सँहारण॥ और एक मागौं बरदाना। होहि पुत्र यक चतुर सुजाना॥ दैवरबिधि भयोअन्तर्द्धाना। निश्चरगयो ग्राम हुलसाना॥ कछुक कालबीते जब आई। ताकेपुत्र भयो शुभताई॥ अति अनँद करि बाद्यबजाये। सहित धान्य भण्डार लुटाये॥ सुतको नामधर्‌यो प्रह्लादा। भयो कुंवर अति जग अह्लादा॥ राम भक्त अति परम पियारा। सकल जगतका प्राण अधारा॥ बर्ष पांचका जबसुत भयो।निश्चर पढ़न हेततेहि कह्यो॥ संडामर्का कुल गुरु जाये। निश्चर पतिने तुरत बुलाये॥ सुत प्रह्लाद प्राण सम प्यारे। सौंपहुं तुमहिं तनक ये बारे॥ देहु पढ़ायबढ़ाय सप्रीती। स्वल्प पढ़ावहु राज्यकि नीती॥ लैगुरुभवन आपने गयऊ। भरिपाटी शिक्षालिखि दयऊ॥ पढ़हु लालये चित्त लगाये। खेल कूदकी सुर्ति गँवाये॥

कुंडलिया

सुनिस्व बचन प्रहह्लाद प्रिय बोले मधुर सानम। नाथ क्षमहु अपराध मम मैं कछु करौं बखान॥ मैंकछु

करों बखान सुनहु स्वामी चितलाई। लिख्यहु आपजो तख्त हमें यह कछुनहिं भाई॥ एक रामसे काम और कछु मनहिं नहैं गुनि। मनमें क्रोधित भयो गुरूप्रह्लाद बचन सुनि॥

दो॰ अरेकुंवर अबना लियो भूलिहु हरिका नाम।
जोहम सिखलावें पढ़ो धरे चित्त अभिराम॥
बिद्या सबसों सारहै सोविद्या पढ़ि लेहु।
राम नामको छाड़िकै राज्यनीति चितदेहु॥
बहुबिधिसमझायोगुरू कुंवर न आयोरूयाल।
पकरि बांहलैचल्योजहँ हिरण्यकशिपु भूपाल॥

तोटकछंद

मैं सिखायो नाथ याहि राज्य नीतिहेरिकै। यो पढ़ैहै रामको समस्त काम छोड़िकै॥ हारि मैं गयो सिखाय यो न मान नेकहू। उल्टि ज्ञान देहि मोहिं राम नाम टेकहूं॥ सुनि नृपाल हिय लगाय शूंघि शीश बोलिकै। ज्यों पढ्यो प्रतिक्षमें कहौसो भेद खोलिकै॥ दीन ज्वाब सुमिरि राम सुनहुभूपि पालके। एकराम है अधार प्राणहूसे प्यारके॥

दो॰ सुतन बचन प्रह्लाद के बाढ्यो क्रोध अपार।
फेंकिदियो निज गोदसे बहुरिदियो तेहिमार॥
मंत्री समुझायो नृपति करहु न क्रोध महान।
यासोंअति तकसीर भै फेरि जपिहिनहिं आन॥
सुनि निश्चरप्रह्लादको सौंप्यसिगुरुहिबुलाय।
याहि पढ़ावो प्यारसों राज्यनीति सिखलाय॥

लै आये गुरुभवन महँ दीन्हों बहुत प्रबोध।
फेरि रामको जपकियो तब गुरुभयो सक्रोध॥

सो० लैआये नृपपास मोर पठायो नहिं पढ़ी।
तुम सिखवो कछुतास जो कदापिमानै अबुध॥

चौ० हे ममसुत प्रह्लाद पियारे। पढ़ौ युद्ध बिद्या गुण भारे॥ छोंड़हु रामनाम बिसराई। है ममबैरी वह दुखदाई॥ बोले बिहँसि सुमिरि रघुराई। नाथ रामपढ़िबे चितलाई॥ सुनि नृपबोल्यो क्रोध अपारा। यहि बालकपर करौ प्रहारा॥ आज्ञापाय दूत उठिधाये। पकरि कुवर गिरिमांह गिराये॥ गिरे फूल सम नीचे आई। करिसहायलीन्ह्यो रघुराई॥ यहिबिधि दीन्हेउ क्लेश अपारा। रामआय तहँ कीन्ह उबारा॥ पुनिकरि क्रोध पकरि मँगवायसि। कुंवरदेंह खम्भा बधवायसि॥ कहु अब राम कहांहै तोरे। दे बतलाय दुष्टनिज मोरे॥ बोले कुंवर सुमिरि रघुराई। नाथ रामब्यापक सबठाईं॥ हम औ तुम मा राम बिराजै। जेहि मम बांध्यो वहूमें छाजै॥ सकल सृष्टि नारायण केरी। हैं ब्यापक कृपाल तहँ मेरी॥ सुनत नृपति कीन्ह्यो रिस भारी। कहां राम हैं लेहिं उबारी॥ असकहि खड्ग खेंचि तैं लीन्हा। डोली धरा शब्द अतिकीन्हा॥ ताहीसमय खम्भ को फारी। नरहरि रूपलियो सुखकारी॥ निश्चर रूप देखि भय पावा। जानिसि काल मोर नगिचावा॥ नहिं यह देव नरनमा कोई। मोरि प्राण निश्चयहरिलेई॥ रैनिदिवस नहिं भीतर बाहर। खम्भ फोरि निकसा नर नाहर॥

गर्जि नृसिंह तुर्त त्यहि गह्यऊ। बीच जांघ बैठारत भयऊ॥ नखन तासुको उदर बिदारी। आंत कलेजालियो निकारी॥ लियो पहिरि माला समताको। कियो अभय प्रह्लाद ललाको। गरज्यो शब्द महाभयकारी। भये सकल अति जीव दुखारी॥ पुनि प्रह्लाद बिनय बहु करेऊ। तब प्रभु क्रोधशांत सब भयऊ॥ गहि प्रह्लाद गोद बैठारी। बहुत नीति सिखयो सुखकारी॥ फेरि भयो प्रभुअन्तर्द्धाना। तासु कथा मैं कीन बखाना॥ ऐसे प्रभु कृपाल सुखदाई। भजहु तासु सब कामबिहाई॥ पढ़ो सुजन याको चित धरिकै। हियेमांझ प्रभु सुमिरण करिकै॥

इतिश्रीज्ञानआभूषणे कृष्णबिहारीशुक्लबर्दकी निवासिबिरचिते नृसिंहअवतारकथा बर्णनोनाम तृतीयोऽशः॥ ३॥

दो० त्रय त्रेता अवतार भे मुनिजनके सुखदाय।
बर्णों ताको सार कछु शारद शेष सनाय॥
बढ्यो भार जब धरापै नारायण हियजान।
परशुराम अवतार तब धर्यो धरापै आन॥

पद्धरीछन्द॥

जमदग्नि मुनि जेहि नाम भार्षे तासु घर अवतार लिय। इक्कीसबार सँहारि क्षत्री धरा भार उतारदिय॥ जो था सहस्त्रबाहु ताहिकुठार पाणि बिनाशकिय। यहि भांति और सकाम कीन्हे सकल जगकेप्राण प्रिय॥

दो० अबभाषों ज्यहि बिष्णुप्रिय बावनरूप उदार ।
बलिसे पृथ्वी दानलै शक्रहि दिय सुखकार ॥
राजाबलि बिख्यात भो सकल धराके माहिं ।
सकलभूमिको राज्यलै करै नीति निपुणाहिं ॥
यकदिन मन अनुमानिकै निर्ज्जन बनमें जाय ।
कठिन तपस्या किय तहां शाक मूल फल खाय ॥

चौ० जब बलि कियो तपस्या भारी । ह्वै प्रसन्न बिधि कह्यो प्रचारी ॥ जो इच्छा बरमांगो कोई । सकल कामना पुरवौं सोई ॥ करि बिनती बोले बलिराजा । हौ प्रसन्न जो अतिमहराजा ॥ तौ मांगतहौं यह बरदाना । देव हर्षिकरि कृपानिधाना ॥ तीनोंलोक राज्यमें करहूं । अजर अमर होजाउँ न मरहूं ॥ बोले बिधि सुन प्राण पियारे । एक बात हमकहँ सुखारे ॥ जो शतयज्ञ करौ तुम राजा । तौ बरदान होहि शुभ छाजा ॥ असकहि बिधि भै अन्तर्ध्याना । राजा पुरआयो हुलसाना ॥ करै लाग शुभयज्ञ सुखारे । एक रही बाकी जब प्यारे ॥ डरे देव शक्रहु कंपाने । गे प्रभुपास महाभय माने ॥ नाय शीश बिनती बहु कीन्हा । तब प्रभु अभय तिन्हैं करिदीन्हा ॥ पुनः आप प्रगट्यो भुवआई । बावन रूप धर्‌यो सुखदाई ॥ जहँ बलि करैं यज्ञ शुभ ठानी । बावन तहां पहूंच्यो आनी ॥ साढ़े तीनिपैग भुइँ मांगी । तब बलिकह तुम बड़े अभागी ॥ जोतुम मँगते भुइँ प्रणठानी । देत्योंमें आधी रजधानी ॥ पै मोहिं एक अँदेशो आवै । सोहम तुमसों प्रगट बतावैं ॥ दिव्यरूप तुम फिरौ सु-

खारी। सकल जगतके प्राण अधारी॥ तुम्हें देख मोहैं सबलोका। होतैं दर्श मिटैं सब शोका॥ दिव्यरूप अक्षि बरैं मसाला। भौंह बाहु अति बनी बिशाला॥ कोटि काम अवलोकत लाजैं। कटि देखत केहरिगण भाजैं॥ की तुम इन्द्र बरुण मा कोऊ। की नारायणहौ तुमसोऊ॥ दीन्हो दर्श मोहिं तुम ऐकै। मैं कृतकृत्य भयों मुदलैकै॥ नापिलेहु यहमैं बरदीन्हा। बावनसुनत रूप बड़कीन्हा॥ नाप्यो तीनिलोंक त्रयपदते। पुनि बावन प्रभु बोले बलि ते॥ आधोपैग और म्वहिं दीजै। नाहिं तो सत्त छांड़ि मुदलीजै॥ तब बोले बलि भययुत कांपी। नाथ पृष्ठ लीजै मम नापी॥ लियो नापि आधापग पृष्ठा। पुनि बोले बलिसे प्रभु श्रेष्ठा॥ हौं प्रसन्न अति मैं बलि तुम पर। जो चाहौ सो मांगौ हमपर॥ तब बलिकह्यो नाथ सुनि लीजै। सदाआय म्वहिं दर्शन दीजै॥ बरंब्रूहि कहि अन्तर्द्धाना। राज्य शक्रदीन्ह्यो सबिधाना॥ ऐसे करत सदा प्रभु रक्षक। जब जब गाढ़परै परतक्षक॥

दो० भजौ ताहि चितलायकर हे सज्जन सुखकारि।
जहां कष्ट परिहै बिकट रक्षहिं तहँ त्रिपुरारि॥

इतिश्रीज्ञानआभूषणे कृष्णबिहारीशुक्लबदर्का
निवासिबिरचितेपरशुरामवबावनअवतार
कथाबर्णनोनामचतुर्थोंऽशः॥ ४॥

दो० आगम जानिबसंतकीशीतलियो धनुतानि।
खैंचिश्रवणलों चापको छोंड्योशरसन्धानि॥

अरिहंता ॥ सुन्दरिरूप केकयी रानी। ताके भरतभये सुखदानी ॥ दिन दिन बढ़त करत प्रभु लीला। ब्याह योग्य जब भयो सुशीला ॥ मैथिलपुरी परम अति पावन। तहां जनकतनया के कारन ॥ भयोस्वयंबर अतिहि स्वहावा। जनक नृपति यक धनुष मँगावा ॥ जोयाको टूरै नृपकोई। बरी जानकी कन्या सोई ॥ सुनिप्रण देश देशकेराजा। गयो जनकपुरसहितसमाजा ॥ कौशिकमुनि लै लक्ष्मणरामा। गयो धनुषमखदेखनकामा ॥

दो० गर्ब दूरिकरिनृपनको लियउठाय प्रभुचाप।
खंडकियो ह्वै ताहिकेहर्योसकल सन्ताप ॥

चौ० दशरथ नृप जब सुने सुखारी। लै बरात पहुंचे तहँ भारी ॥ करि बिवाह आनँदसो छाये। लौटि अवध पुर सबजन आये ॥ गुरू बसिष्ठ पूज्यजे कुलके। बोले दशरथ नृपसों हितके ॥ देवयुवराज रामकोआजू। पालैं प्रजा करैं शुभराजू ॥ यह कहु बचन मंथरासुनिकै। केकय सुतासों बोली हँसिकै ॥ होतरामयुवराजआजुहैं। करत गान बन्दीमागधहैं ॥ सुनि केकयी बहुत सुखमाना। अहोभाग्य कहि सुयश बखाना ॥ सुनि मंथरारोष कर बोली। बहु बिधि समुझायो मुंह खोली ॥ बारहबर्ष राम बनबासा। भरत राज्यको करैंप्रकासा ॥ बहु केकयीनृपति सों बोली। दुष्ट बचन अनहितके खोली ॥ पूर्व हमै जो ह्वै बरदीन्हा। सोहम आजुचहतिहैं लीन्हा ॥ द्वादश बर्ष राम बनबासू। भरतराजको करैं प्रकासू॥ सो सुनि नृपति बिकल ह्वै गयऊ। मरण समय के सदृस

भयऊ॥ सीता राम लषण सुखकारी। गये बनहि अति आनँद धारी॥ पंचबटी जहँ परम सोहावन। तहां बसे रघुबर मनभावन॥ तहँ निश्चर पति जो लंकेशा। हरेसि जानकीधरि यति भेशा॥ भे प्रभुकेसहाय सुग्रीवा। लैसह सेन चले बलसीवा॥ लंका घेरिलियो चहुं जाई। भई तहां अति बिकट लराई॥ भये राक्षस तहँ संहारा। धराभार प्रभु दियो उतारा॥ पुनि प्रभु कियो धनुष टंकोरा। मार्‌यो बाण रावणहि जोरा॥ लागत बाणमृतक ह्वैगिर्‌यऊ। ब्योमसुरनदुंदुभिको हन्यऊ॥ जाको पार न पावै कोई। शिव चतुरानन आदिकजोई॥ सो प्रभु करैं मनुजकी लीला। भक्तबश्य अतिपरम सुशीला॥ मारि रावणहि लौटे रामा। सहित जानकी लक्ष्मण धामा॥ जादिन राम अवधपुर आये। भयोमोद जो बरणि न जाये॥मिलेराममातहिहितकारी। पुरजन सकल नरन अरु नारी॥ भाअनँदको बर्णै पारा। भयो अवध अति परम सुखारा॥जानि मुहूर्तशुभगअतिपावन। गुरु बशिष्टबोलेमनभावन॥ गद्दीहोइरामकीआजू। सकल सखिन मिलमंगलसाजू॥ जबमुहूर्त आवासुखदाई। गद्दीबैठि हर्षि रघुराई॥ ताकी छबिको बर्णैपारा। जाहि बखानत शेशहु हारा॥

दो० असप्रभु दीना नाथ हरि भक्तन वश्य कृपाल।
सकल सृष्टिको भारहरि मेट्यहु दुखजंजाल॥

सो० ताहि भजहु मनमूढ जो जगमें कल्यान चहु।
होहुभक्ति आरूढ हेमन मूरख समुझेरे॥

हरिगीतिकाछंद ॥

जो पढहिं याहिलगाय चितकोचारिफल सोपावहीं । दुःख दरिद्रहि छोंडिकै वैकुंठकोपगधारहीं ॥ जहांनहिं कहुंकाल ब्यापै सर्ब्बःसुख बिराजहीं ॥ बीच देवनके सो मानुष परमगति को पावहीं ॥

इतिश्रीज्ञानआभूषणेकृष्णबिहारीशुक्लबदकानि-
बासिबिरचितेश्रीरामअवतारकथावर्णनो
नामपंचमोंऽशः ॥ ५ ॥

दो० द्वै द्वापर अवतार भे कहौं तिन्हैं समुझाय ।
सुनहुमनुजचितलायकरहियेसुमिरिरघुराराय॥
धर्‌यो रूप प्रभु बौद्ध को गया क्षेत्रमें आय ।
त्रिपुरासुरको बधकियोनास्तिकमतहिचलाय ॥
बहुरि कहौं ब्रजचन्दकोजिमि प्रगटे ब्रजआय ।
धरणि उतारनभार हित गोपिनके सुखदाय ।

चौ० होहि अनीति महाभय कारी । बाढेदैत्य अमित बलभारी ॥ धारा भार नहिं सक्यो सम्हारी । गैब्रह्माके पास दुखारी ॥ बिधिलै धराबिष्णुपहँगयो । जोरिपाणि करठाढ रह्यो ॥ बोले नारायण केहिकारन । आयो धरा सहित चतुरानन ॥ बोलेबिधिअतिविनयबखानी । सुनहु कृपाल बिष्णु ममबानी ॥ नाथ दैत्य अतिकरैं अनीती । सकल बलिष्ट धराको जीती ॥ सुरमुनि देंहि दुःख अति भारी । धराभार नहिंजात सँभारी ॥ त्यहि कारण आये तवपासा । धरणी भारउतारन आसा ॥ सुनत प्रभु दो

केशउखारे। एकश्वेत अरु दूसरकारे॥ येदोबार धरा अवतरिहैं। सकलदुष्ट को ये संहरिहैं॥ श्यामबार से कृष्ण बखाने। श्वेतबार हलधर जगजाने॥ ह्वैहैं ये हमारि शुभअंशा। सकल दुष्टको नशिहैं बंशा॥

दो० सुनत बचन हरिके प्रियद अजगे अपने धाम।
धरणी हरि अवतरणकी आशा आठौ याम॥

चौ० यहां कंस मथुराका राजा। यकदिन जोर्योसकल समाजा॥ बोला सबसों प्रीति बढ़ाई। करहु मंत्र यक सब मिलि भाई॥ भइ मम भगिनी ब्याहन योगा। ढूंढ़हु बरयाके संयोगा॥ बोले सकल मंत्र यक ठानी। अति धीरज सों मतिके खानी॥ सूरसेन मथुरा के माहीं। तासु पुत्र बसुदेव कहांही॥ अति उत्तम बर योग सुखारी। करौ ब्याह तासों छबिभारी॥ सुनत बचन गद गद भयो राजा। बोलि बिप्रको टीका साजा। सो मथुरामें दियो पठाई। बहु प्रकार की बिनय लिखाई॥

दो० भईलग्न जबब्याहकी अतिआनँदको पाय॥
लै बरात बसुदेब तब कंसद्वार पर आय॥

चौ० भयो ब्याह अति परम उछाहा। दायज बहुत दियो नरनाहा॥ कियो बिदा आनँदसों छावा। तब आकाश बाणीयह गावा॥ याके अष्टम गर्भ प्रकाशा। करिहैं कंस तोहिंसो नाशा॥ यहसुनि कंस बहुत डरपायो। खैंचि खड्ग मारन को धायो॥ तब बसुदेव कहा समुझाई। याके पुत्र होहिं जो राई॥ सो सुतलै तुम्हरे हम पासा। ऐबे तहिक्षण सहित हुलासा॥ उनको आप

बिनाश करावें। यामें कछु सन्देह न पावें॥ सुनत कंस लौटा दुखदाई। यहांबरात धाममें आई॥ कछुककाल में सुत यक भयऊ। लै बसुदेव कंस को दयऊ॥ यहि बिधि जबसुत पैदाहोवैं। लै बसुदेव कंसकोदेवैं॥ अष्ठम गर्भ भयो भगवाना। तबदेवकी अतिहि सुखमाना॥ होय चतुर्भुज दर्शन दीन्हा। सुफल मनोर्थ जक्तको कीन्हा॥ बोले प्रभु अति गह्बर बानी। बासुदेवसों सुखकेदानी॥ नन्दरायकी यशुदारानी। ब्रजमें बसै अहीरि सोजानी॥ ताके तनया यहिक्षण भैहै। कछूनाहिं सुधि वाको ह्वैहै॥ हमको आप वहां पहुंचावो। कन्यालै नृपकंस देखावो॥ सुनत बचन अमृतके साने। कृष्णछोंड़ि कन्यालै आने॥ सो कन्यालै कंसहि दीन्हा। हर्ष समेत नृपति त्यहि लीन्हा॥ गहि पटक्यसि पत्थरपर जाई। कन्या छूटि अकाश स्वहाई॥ अब आगे कछु कहौं बखाना। ज्यहि बिधि नन्दराय सुखमाना॥ भये कृष्ण यशुदाके जाये। होनलगे आनँद बधाये॥ उत रोहिणिके हलधर भैया। होत बजी आनंद बधैया॥ सखियां करैं मङ्गलाचारा। लै कपूर आरती उतारा॥ जो सुख भयो नन्दके माहीं। सो कछु मो बर्णोनहिं जाही॥ सुतको नाम कृष्ण अस भाष्यो। औ असंख्य नामनको राख्यो॥ लागे दिन २ बढ़न बिहारी। ज्यों राकाशशि बढ़ै सुखारी॥

दो० तोतरितोतरि बातेंकहैं घुटरुन चलैं सुजान।
देखत सुख दूनोबढ़ै जोनहिं बनै बखान॥

सो० सबब्रजबनिता ग्वाल देखि २ सुखपावहीं।

भयो नन्दको लाल को छबि बर्णैं तासुकी ॥

चौ० यकदिन प्रभु पलनापै सोवैं । नन्द महरि तहँ दही बिलोवैं ॥ औचक एक निशाचर आयो । कंस नृपति ने ताहि पठायो ॥ सो प्रभुको लिय गोद उठाई। गयो अकाश महा दुखदाई ॥ ताको घींचदाबि प्रभुमारा । ह्वै छाती सवार भुवडारा ॥ गिरा धरणिपर अति भय कारा। मुखसे छूटि रुधिरकी धारा ॥ हरबराय दौरीं नँदरानी। देखि निशाचर अतिभयमानी ॥ लियो कृष्ण को गोद उठाई। बारबार चूमति हियलाई ॥ अतिडर युक्त महर सब ग्वाला । बार बार चूमहिं नँदलाला ॥ आजु भये सबदेव सहाहीं। बचिगो कुंवर निशाचर पाहीं ॥ यहिबिधि करत सदा हरि लीला। भक्तबछल प्रभु परम सुशीला ॥

इतिश्रीज्ञानआभूषणेकृष्णबिहारीशुक्लबदर्का
निवासिबिरचितेश्रीकृष्णअवतारकथा
बर्णनोनामषष्ठोंऽशः ॥ ६ ॥

सो० कौनकहै गुणगाय भये सयाने कृष्णजब ।
देहिंमातुसुखदाय माखनचोरीव्याजकरि ॥

चौ० बढ़े कृष्ण तबकरैं ढिठाई । दहीखाय मटुकी ढनमाई ॥ मिलि छोटे गोपनके साथहि । करि चोरी मटुकी दधि आनहिं ॥ कछुक खाय कछु देत लुटाई । कछु ग्वालनको देहिं बटाई ॥ देखैं जब ग्वालिनको आवत। सहित ग्वालके तब भगिजावत ॥

दो० यकदिन गयो प्रभातमें मिलि गोपनके साथ।
दहीखाय मटुकी पटकि ब्रजबासिनके नाथ॥
सो० ग्वालिनि घरमें आय देखै तो ब्रजचन्द को।
दहीखाय ढरकाय भागिचले म्वहिं पेखिकै॥

चौ० यहिबिधि करत सदा हरि चोरी। दहीखाय मटुकीको फोरी॥ देखि सकल अति ब्रजकी नारी। छकित होहिं प्रभुरूप निहारी॥

दो० एकसमय श्रीकृष्णने लीन्ह्यो सखा बुलाय।
माखनचोरी कारने पैठे केहु घर जाय॥
सो० माखनखायअघायमटुकीफोर्योशब्दकरि।
सोसुनिग्वालिनिआय पकर्योबांहगोपालकी॥

चौ० नितनित तुम माखन ढरकावो। मटुकीफोरि भागि घरजावो॥ औचक आज मिल्यो ममप्यारे। अति लंगर तुम नंददुलारे॥ तरुणरूप अति मदके माते। दही बहान फिरौ अठिलाते॥ अबतौ आय मिल्यो तुम धाई। कहौ कौनगति तुम्हरि कराई॥ असकहि और गोपिको टेरी। लिय बुलाय सुंदर सुख गोरी॥ आज श्याम मम परेहैं फन्दे। नटवर रूप फिरैं छलछन्दे॥ पुनि बोलीं सब ब्रजकी बाला। हम जानैं तुव गुण नँद लाला॥ महरि माय तुमको नहिं जानें। जे गुण तुम में हैं ये छिपानें॥ सोसब कहिहौं महरिसों जाई। नहिं चुपरैहौं गमको खाई॥

हरिगीतिकाछन्द॥

अस कहत सब ब्रजबानिता गहिहाथ फिरि बोलत

भई। तुम नन्दलाल अहीरके चोरी करनमें मनदई ॥ नहिं नेकु मानो पैठिजावो खाय मटुकी फोरही। कछु आप खाय लुटाय देवो नित्य माखन चोरही ॥

दो० बड़ेभये तुम येतने माखन चोरी खाय।
आजुमिल्योममधाममेंपकर्योंतोहिंकन्हाय॥

सो० अतिलंगर अति ढीठ कहोनमानो नेककछु।
माखनखावअडीठ देखि तुर्तभजिजावतुम ॥

चौ० नेक निकारी हौ तुम रीती। यासों तुम्हरी जाय प्रतीती ॥ नन्दमहरके हौ तुम ढोटा। माखनखाय भयेहौ मोटा ॥ सो तुमको हमनेकु न डरिहैं। एक कहौ तौ बीसन कहिहैं ॥ कबसेतुम बड़भये कन्हाई। जोइतनी करते लँगराई ॥ ओई कान्ह हवो तुम प्यारे। गोद खि-लावैं तुमहिं दुलारे ॥ सोप्रभु और भयो नहिं अबहीं। वोई हौ तुम जो थे तबहीं ॥ औरै काज आप इतआवो। खायदही माखन ढरकावो ॥ जोकहुं सूनाघर मिलजावै। तौ तुम्हरी औरहु बनिआवै ॥ सबगुण हम तुम्हरे प्रभु जाने। सकल श्रेष्ठ तुमको हममाने ॥ सोतुम कान्हकरौ दधि चोरी। सबके ऊपर डारि ठगोरी ॥ और बाममोको नहिं जानो। मैहौं अति चञ्चल प्रभु मानो ॥ जसतुम लंगर तसमैं ढीठी। तुमसों मोसों भई अनीठी ॥ देखैं आजु कौन लचि जावै। या तुममें हममें भगिजावै ॥ अति दधिखाय भयो तुममोटे। आजु निकारोंसो नदढोटे॥

दो० भागे भागि न पाइहौ बचिहौ नहीं छिपाय।
अतिदृढ़ पकरेहौं तुम्हैं लंगरडीठ कन्हाय ॥

सो० बहुघरदियोबिगारि करिमाखनकोओढ़रो।
सोमैंनहिं ब्रजनारि जो होवोंबश आपके॥

चौ० कहीं ठगोरी अन्ते डारी। कीन्ह्यो बश तुम कुंजबिहारी॥ सोतुम आज दहीके ओढ़र। वही ठगोरी डार्‌यो मोपर॥ मैंनहिं परौं तुम्हारे फन्दे। हे माखन चोट्टा ब्रजचन्दे॥ आजु सकल मिलि महरके जाई। कहिहौं मैं तुम्हरी निपुणाई॥ माखन खाय मटुकि को फोरैं। रूप देखाय चित्तको चोरैं॥ और जहांतक बनी बनाई। सोसब कैहौं तोरि ढिठाई॥ महरि डेर मैं नेकु न मनिहौं। एक कहैं तौ लाखन कहिहौं॥ हम जान्यो तुमहींको तबहीं। गुड़िया खेल रच्यो प्रभु जबहीं॥ लै उठाय गुड़िया तुम भागो। बहुरि आय गोपिन सों मांगो॥ जोनहिं देयँ तुमहिं पकराई। तोतुम तासोंकरौ ढिठाई॥ ऐंचि बस्त्र दांतनसों फारो। बहुरि हाथ ता ऊपर डारो॥ वे सब लाजछोंड़ि नहिं बोलैं। आपु ताहि घूंघुट बहु खोलैं॥

दो० असकहिसबब्रजबाममिलिकान्हैबहुतलजाय।
मिलि आपुसमें लैचलीं पकर फेंट अरगाय॥

सो० जहां यशोमति माय दही बिलोवै रोहिणी।
तहां पहूंची जाय बोली रिसकर मधुबचन॥

पद॥

एरीतुमसुनौ यशोमतिमाई। कान्हकीलंगराई॥ सूने भवन जाय घुसभीतर दहीखाय ढरकाई। कछुनिज खावैं कछुक खवावैं कछुक देहिं बिथराई॥ गोरस खायमटु-

कि मोरि फोरैं क्षीरदेहिं ढरकाई। अति लंगर तेरो पूत यशोमति बरजोरी मेरीमाई ॥ एरी तुम सुनौ यशोमति माई ०॥अतिहि अनीतिकरत मेरिमाईमोंसों बरणि न जाई। जो कहुं देखत जात भवन सों घर भीतर घुसिआई ॥ मारिलंत भीतर कि कैंवारी हमनहिं जावैं पाई। ऐसो करत कान्ह ब्रज घर घर बरजोरी मेरी माई ॥ एरीतुम सुनौ यशोमति माई ० ॥ बोले कृष्ण सुनो मेरि मैय्या नाहक दोष लगावैं। जो कहुं हाटबाट मोहि पावैं घरभीतर लैजावैं ॥ सब मिलि मोको नाच नचावैं गुड़िया खेल खेलाई। दहीदूधकोकरौं बहानामोंसो पैर मलाई॥ एरी तुमसुनो यशोमति माई ०॥सुनत यशोमति कृष्णके बैना बोली बचन स्वहाई ॥ नाहक दोष लगावो वृजनारी कुलकीकानि बिहाई॥ मेरे बाल अतिहिहं ढोटा क्या जानै लंगराई। जाहुसकल वृज बनिता घर घर अब नहिं कान्हा आई ॥ एरी तुम सुनो यशोमति माई ० ॥ येते बचन सुनत नंदनन्दन छोंड़ि दियो मुसकाई। कृष्ण बिहारिआश गोपिन की पुरवैं श्रीयदुराई ॥ एरी तुम सुनौ यशोमति माई कान्हकी लंगराई ॥

इतिश्रीज्ञानआभूषणेकृष्णबिहारीशुक्लबदर्का निवासिबिरचितेमाखनचोरीलीलाबर्णनो नामसप्तमोंऽशः ॥ ७ ॥

दो० राहस कीन्हो सांवरो वृन्दाबनमें जाय।
अयुत षष्टदश एकशत गोपिनको ललचाय ॥

सो० पुनि भे अन्तर्द्धान देखि गर्ब ब्रजयुवति को ।
यहिबिधिकृपानिधान कीलीलामक्तनबछल ॥

चौ० लाग्यो मास सोहावन कातिक । आशा कियो स्वातिकी चात्रिक ॥ भानिर्मल आकाश स्वहावन । तारा छिटकि रहे मनभावन ॥ खिल्यो चन्द्रमा किरणपसारी। छायरही ताकी उजियारी ॥ भइ चिन्तामणिभूमि स्वहाई । मानहुं फर्सबिछी सुखदाई ॥ दादुरलियो मवनिकोसाधी । ज्योभांदव नददेवोबांधी ॥ फूलिअगस्तकुमुद कुम्हिलाने । बाजत्रास ज्यों लवालुकाने ॥ भयो स्वहावन बन सुखकारी । चलैमनोहर त्रिबिधिबयारी ॥ औचक जागिपर्‌यो घनश्यामा । बाढ्यो काम आय सुधि श्यामा ॥ पहिरि आभरण मुकुट लगाई । लैबंशी त्रिभुवन सुखदाई ॥ चल्यो सघन बन कुंजबिहारी । हरष्यो बिपिन देखि सुखकारी ॥ तहँप्रभु मुरली अधरलगाई। मन्दसुरनसों ताहि बजाई ॥ लैलै ब्रजबनितनके नामा । चन्द्रावलि सुखमा अरुश्यामा ॥

दो० सुनत तान मोहित भईं बंशीध्वनि रहि छाय ।
भइँ बिहालब्रजबानिता उठीं सबै अकुलाय ॥
कहांकहां कहि रहिगईं कहां बजायो श्याम ।
कहँयह बजी बांसुरी लैलै हमरे नाम ॥

सो० फेरिनन्द कोलाल धरि अधरन परबांसुरी ।
मार्‌यो तान बिशाल रहीपूरि ध्वनिशब्दकी ॥

हरिगीतिकाछन्द ॥

तब सकल बाला ह्वै बिहाला सुनत ध्वनि चकित

भई। तजिकाम धाम बिसारि बनिता प्रेममदमातीठईं॥ जे स्वबस पतिके संग बिहरें छोड़िवे बनको गईं। कोउ केलि नंगीकरें हितसो सुनत बंशी आमिलीं॥ कोउदूध प्यावत तज्यो बालक दौरि आगे को बढ़ीं। कोइगाय प्यावत बच्छलीन्हें छोड़िवे घरसेकढ़ीं॥ कोउ माँगकाढ़ें केश बांधें कोउ लगावें उबटना। सो चलींतजिकैसकल बालाहाथलीन्हें दरपना॥ कोउ लगावें पान पतिकोकोउ खवावें स्वामिको।सोछांड़ि धाईं सकल बाला आइमिलि गईंश्यामको॥ कोउमुकुरदेखें चन्द्रबदनी कोउ राजैंसेज पर। कोउ पहिरि उलटे बसनदौरींआयपहुंचीरासपर॥

दो० यहिबिधिते ब्रजबाम सबपहुंचीबनमें आय।
जहां कृष्ण अधरन धरे बन्शी रहे बजाय॥

सो० देखिछकितभे श्याम बोलेअमृत सह बचन।
कहौकहा है काम केहि कारण आईयहां॥

चौ० लोक लाजकी कानि बिहाई। अर्द्धरात्रि तुम बनमें आई॥ निजपति छोंड़ि काम को त्यागी। उलटे बसनसवांरि सुभागी॥ अर्द्धरैनि तुमको डरनाहीं। सब मिलि आइगयू बनमाहीं॥ कहौकाम मोसों चितलाई। छोंड़ि धर्म ज्यहि कारण आई॥ तब बोलीं सब गोप कुमारी। अन्तर्यामी तुम बनवारी॥ प्रथम बजाय बांसुरी टेरे। लैलैनाम सुरन में मेरे॥ बहुरिशास्त्र को करौ बिचारा। असनहिं चही तुम्हैं नटवारा॥ प्रथम बुलाय पुनः अपमानै। ताको दोष पुराण बखानै॥ पूर्व कह्यो नँदलाल बखानी। मोरि शरण आवै जो प्रानी॥ प्राण

तुल्य राखौं मैं ताही। सकल सिद्धि देवौं मैं वाही॥ सो अब आप कहौ कसबातैं। बाढ़त दुःख सुनत मैं जातैं॥ सुनतबचनबिहँसे बनवारी। बोले बचनमधुरसुखकारी॥

दो० तुमसबबाला प्राणसमनिश्चयभक्तिहमारि।
परचोलियोतुम्हारहमअसकहिहँसेबिहारि॥

सो० जितनी ब्रजकी बाम तिननेरूपबनाय हरि।
कियोरासमुखधाम रासबस्तुमँगवायप्रिय॥

चौ० मिलि द्वै द्वै गोपीकर जोरैं। बीच बीच प्रभु करैं किलोरैं॥ ततता थेइ थेइगीत अलापैं। झोमझोमझन ननचत तालपै॥ सप्त सुरनसों बंशी बाजै। तीनलोक पेखत छबिलाजै॥ देखि छकित भे सकल सुरेशा। लै बिमान आये ब्रज देसा॥ झोरिन पुष्प देहिं बर्षाई। होंहि मग्नदुन्दुभी बजाई॥ काहुकलेहिं पकरिबनवारी। काहुकि देहिं कंचुकी फारी॥ काहुकगलपरहाथ पसारी। लेहिं अङ्क में भरि बनवारी॥ काहुकि बिन्दी देहिं बिगारी। पुनि ईंगुरसेदेहिं सुधारी॥ काहुकि तोरि पचलड़ी डारैं। बिनि बिनि गुरियां ताहि सुधारैं॥ काहुक धरि लपटाय बिहारी। मलैं ताहिमुख चन्द्र निहारी॥ काहुकि सारी लेइ उतारी। काहुक मुख चूमैं बनवारी॥ काहुकिटंड़िया लै गिरधारी। पहिरैं आपुसुधारि सुधारी॥ काहुकिनकबेसरि उतराई। काहुककुंडल लेहिं छिड़ाई॥ काहु महाउर देंहि मिटाई। करैं कौतुहल मुरलि बजाई॥

दो० केहु सखिके बंद टूरिकै अंगियालेहिं छिड़ाइ।

सो पहिरैं नँद सांवरो क्रीड़ा रास मचाइ ॥
सो० भईं हर्षवृजबाम सुधि नाहीं कछु बदन की।
बाढ्यो काम सकाम को छबि बर्णौतासुकी ॥
चौ० बढ़ी प्रीति गोपिन उरमाहीं। असन बसनकी सुधि केहुनाहीं ॥ कोइ कृष्णकोलै बैठारी। पुजबैं आस स बस्त्र उतारी ॥ कोइ मुरलीको लेहिं छिड़ाई। मन्द सुरनसों ताहिबजाई ॥ कोइ मुकुटलै अपने बांधै। कोइ ननन की सैनैंसाधै ॥ कोइ मदैं कपोल गहि हाथा। कोइ लपटे प्रभुको लै साथा ॥ कोइ प्रभुको अंकम लपटावैं। कोइ बंशीलै मधुर बजावैं ॥ कोइ पीताम्बरलेहिं छिड़ाई। अपनी सारी देहिं ओढ़ाई ॥ कोइ उतारिबेंदिया मुखपरसे। बांधै बनवारीको हितसे ॥ कोइ पकपान उतारि बंधावै। कोइ अँगिया निकारि पहिरावैं ॥ कोइ सुरमा को देहिं लगाई। कोइ अलकैं गुंधिदेंहि बनाई ॥ कोइ गुंधि गजरा दें पहिराई। कोइ मिस्सी को देंहि लगाई ॥
दो० कोइकहैंप्यारे प्राणपति बंशी अपनी देहु।
कोइ कहैं नन्दकुमारजी कछनी अपनीलेहु ॥
हरिगीतिकाछन्द ॥
कोई कहैं प्यारे नन्दबारे मुरलि तनु मुखमें धरौ।
कोइ कहैं गोपी हाथ जोरे राग तन तुम अनुसरौ ॥
कोइ कहैं प्यारी हवैसुखारी नृत्य का कौतुक करौ। कोइ कहैं बाला हवै बिहाला नैनकी सैनैं हरौ ॥
चौ० कोइ कहैं प्यारे मृदंगबजाओ। कोइकहैं तबला

तनु ठनकाओ ॥ कोइ कहैं मुरली के सुर गाओ । कोइ कहैं तनु मुरचंग बजावो ॥ कोइकहैं मंजिरा लेहु मिलाई । कोइ कहैं झांझैं देहु बजाई ॥ कोइ कहैं सारंगी गहि लीजै । कोइ कहैं भेरी की धुनि कीजै ॥ कोइ कहैं डफ गुमकार मचाओ । कोइकहैं एकताराको मिलाओ ॥ कोइ कहैं सहनाई मोहिं भावै । कोइ कहैं दुन्दुभि नहीं सोहावै ॥

दो० यहिबिधि गोपकुमारि सब भईं प्रेमकेमत्त ।
निश्चयजान्योकृष्ण अब भेबशहमरेकन्त ॥

सो० सो बनवारी जान लै राधा को संग में ।
ह्वैगे अन्तर्द्धान गर्ब गरूरी भंजनहिं ॥

चौ० लै वृषभान सुता हरषाई । चले कुंजबन कुंवर कन्हाई ॥ मनमें गर्ब कियो तब प्यारी । हैं वश हमरे कृष्णविहारी ॥ सकल गोपिकनको तजिदीन्हां ॥ हमको श्याम संगमें लीन्हा ॥ बोली प्रिया बहुरि मुसकाई । ह्वैरूषी यह बचन बनाई ॥ शीघ्र चलतहैं आप कन्हाई । मोसों इतो चलो नहिंजाई ॥ कठिन भूमिकोमल पद मेरे । केहि बिधि पंथ चलौंप्रभुहेरे ॥ लेहु श्याम मोंहिं कन्ध चढ़ाई । हौंथकिगई दूरि बहु आई ॥ गर्ब वचन सुनि प्रभु मुसकाने । बोलेबचन मधुर रस साने॥ चढ़हु कन्धपै राधाप्यारी । असकहि बैठि गये बनवारी॥ ह्वै हर्षित वृषभान कुमारी । कंध चढ़नकोहाथपसारी॥ भे तब अन्तर्द्धान मुरारी । रहि गइ श्यामा हाथ पसारी॥ अहो प्राणपति प्राण अधारा । मन रंजन भंजन

दुख भारा ॥ कहां गयो मोहिं छांड़ि बिहारी। मैं बि-
रहिनि तलफौंदुख भारी ॥ बेगि सहाय करौ बनवारी।
अस कहि मुर्छिगिरी सुकुमारी ॥ आरत बचन सुनत
ब्रजबाला। जे तलफैं बिननन्दकोलाला ॥ लियो कुंवरि
को हृदयलगाई। कहुप्यारीतू कसबिचलाई ॥ है तूअति
प्रीतम की प्यारी। कहांगयेतोहिं छोड़िबिहारी ॥ देखि
तोंहि अतिशयदुख होवै। कहुप्यारी तू कस भुइँ सोवै ॥
दो० बोली कुंवरि उसांसलै गोपिनसों सुकुमारि।
मोंहि छोंड़ि प्रीतमगयेनिर्दय कृष्णबिहारि ॥
चौ० मोहिं नहीं कछु सुर्तिहै ग्वारी। कहां गये मो-
हिं छोंड़ि बिहारी ॥ हरे कृष्ण हे कृष्ण पियारे। बेगि
लेहु सुधि नन्दकुमारे ॥ लैराधाको सब वृज बनिता।
ढूंढ़नलगीं बिपिन सर सरिता ॥ भई श्रमित सबगोप
कुमारी। मिलैं नहीं कहुं कृष्णबिहारी ॥ अति बिह्वल
तब ह्वै ब्रजनारी। पूंछत फिरैं सकल बनझारी ॥ हेअ-
शोक पर शोक निवारन। देहु बताय हमैं मन भावन ॥
हे कदम्ब प्रीतम के प्यारे। तुमकहुं लखेजात बनवारे ॥
देहु बताय हमैं गिरधारी। हे अम्बाकी हरिहरि डारी ॥
तुमसब झुकी श्याम के कारन। ह्वै तुम्हरे तरगे मन
भावन ॥ हे कचनार खिले तुमफूले। देखेकहुं मनमोहन
भूले ॥ हे तुम खिन्नी पाकट बीरा। देखे कहुंतुम हैं यदु-
बरा ॥ हौ ठाढ़े तुम सकल स्वहावन। देहु बताय हमैं
मनभावन ॥
दो० हे बरगद तुम झंडुले पर स्वारथ के काज।

कीन्हें छाया हौ सुभग दे बताय ब्रजराज ॥

सो० सुनत क्रोधकर दूसरी बोली बाम रिसाय।
यासों मत पूछो अली देखि हमैं हर्षाय ॥

चौ० एरि सखि चलौ मालती पासा। देइ बताय करी नहिं हांसा ॥ खिली चन्द्रसम है सुखकारी। देखे कहुंहै ईं गिरिधारी ॥ सुनत लियो मुख तुर्त फिराई। पुनि गोपी बोलीं भय खाई ॥ हेतुलसी प्रीतम की प्यारी। मस्तक धरत तोहिं गिरधारी ॥ दे बताय हमको ब्रजचन्दा। है तू मनमें बहुत अनन्दा ॥ हे जूही केवड़ा तुम भाई। हमैं देहु ब्रजचन्द बताई ॥ हे दाड़िम अखरोट पियारे। किंशुक तरु ठाढ़े लहकारे ॥ तुमकहुं देखे हैं प्रिय प्यारे। बंशि बजावत जात मुरारे ॥ हे सब बनके ब्रक्ष सुखारी। तुम देखे हैं कहुं गिरिधारी ॥ देहु बताय दासि निजजानी। पुनि बोलीं अति दुखकर बानी ॥

कुंडलिया ॥

हे ममप्यारे साँवरो कहां गयो तुम छाड़ि। हमअबला ढूढ़त थकीं सकल बिपिनको माड़ि ॥ सकल बिपिन कोमांड़ि तहू परखोज न पावैं। हेप्रीतमनँदलालअजयह तुमहिंसुनावहिं ॥ बेगिमिलो ब्रजराज दर्श देवहु सुख पोहन। धरिअधरन पर मुरलि फूंकि देव हे मनमोहन॥

छन्द ॥

दुःख बिनाश कहावो। तुम बिन हम दुख पावों ॥ बेगि मिलो घनश्यामा। हम सब व्याकुल बामा ॥ अर्द्धनिशा

उजियारी। कैसे परैं कलभारी॥ अतिहिसतावै कामा।
भैबैरिनि निशि यामा॥

कवित्त॥

प्यारे तिहारेलियेहम आजुहिहेरिसकलबन दुःखल-
ईहैं। चन्द्रसों आनन सूखिगयो अरु कुमुदुनिसी कुम्हि-
लाइगईहैं। दुःख कह्योनहि जातहै प्रीतम जोयदसामों
हिंआजु भईहैं। और कहांलौ बखान करौ प्रभुनैननसों
सरिता उमईहैं।

दो० यहिबिधि बहुब्याकुलभईं जबसबब्रजकीबाम।
धरिनसकीं धीरजकछू प्रगट्यो तबघनश्याम॥

सो० धायमिलीं ब्रजबाल लियो अंकभरिश्यामको।
भयोहर्ष त्यहिकाल ज्योंजल मीनहिंकोमिलै॥
गयो दुःख को भार बाजन लगी मृदङ्गडफ।
उमग्यों काम अपार लगीं केलि बनिताकरन॥

दो० तासु समय केरासको को करि सकै बखान।
सहसानन वर्णत थक्यो मैं बपुराका जान॥
धन्यधन्यब्रज युवतिको धन्य कृष्ण सुखदान।
धन्य देवकी मातुको जिन ज्याये भगवान॥
धन्यधन्यब्रन्दा बनहिं धन्यब्रज बासी बाल।
धन्य राधिका जासुसंग बिहरे मदनगोपाल॥

इतिश्रीज्ञानआभूषणेकृष्णबिहारीशुक्लबदर्का
निवासिबिरचितेरासलीलावर्णनानाम
अष्टमअंशः॥ ८॥

सो० करैं केलि नँदनन्दन देखि मातु सुख पावहीं।
आठौयामअनन्द रहैं पेखि छबि श्याम की ॥

दो० एकदिन भूषण साजिनिशि गे ललिताके धाम।
देखनलगे चरित्र तहं छिप कर श्री घनश्याम ॥

सो० ललिताकियोबिचारआवनकोनिशि प्राणप्रिय।
मोसों कियो करार आजु श्याम घर आइहैं ॥

चौ० असजियजानिबाम हर्षाई। मलि उबटनपुनि शीघ्र नहाई ॥ पहिरि आभरण सुगंध लगाई। लैकर मुकुर केश गुंधवाई ॥ बेंदियाभाल बांधि नथपहिरे। ता मेंमोती परे सुनहरे ॥ गरे हमेल लियो बँधवाई। सात लाखकी जेहि बनवाई ॥ बाजू बंद बांक भुज कसिकै। टडिया बँधिलियो मुद लहिकै ॥ पहिर्‌यो कडा छडा पकपाना। पायन मेंनहिं जाय बखाना ॥ नखशिख भूषण साजि सुग्वारी। कुसुम रंगकी ओढ्‌यो सारी ॥ पुनिउठि सेजसवांरि बिछाई। गुंथि गुंथि फूल बिचित्र बनाई ॥ लैआरसी बिम्बतनहेरे। शोचैकब ऐहैंप्रभुमेरे॥ क्षणभीतर क्षणबाहर आवै। क्षणक बैठिक्षण फिरिउठि धावै ॥ आयेनहिं अबतक घनश्यामा। अस कहि शोचैहिय अतिबामा ॥ कीगेसोय जानिनिशि प्यारे। कीरों क्योहै नन्द बबारे ॥ कीगे प्रभु चन्द्रावलिधामा। आयो नहिं निशि बीती यामा ॥ असजिय शोचि कछुक दुख पावै। पुनिकछु शोचि बहुत हर्षावै ॥

दो० देखिचरित अस सांवरो भयेमग्न सबगात।
केहिबिधि पकरौंबामको असजिय जानिलजात ॥

सो० बाढ्यो काम अपार धरि न सके धीरज कछू।
बिहँसेनन्दकुमार धायमिले सखिप्यार सों॥

चौ० लियोअंक भरित्यहिगिरिधारी। ग्वालिनि की सब तपनि निवारी॥ अति आन्दकियो तब बाला। हिय लपटाय नंदको लाला॥ बोली प्रिया बहुरि मुसकाई। कछुक हर्षिकर बचन बनाई॥ हौतुम श्याम अतिहि अलसाने। चंचल नयन कंज कुम्हिलाने॥ बार बार तुम लेहु जभाई। हौ उदासअति कुंवरकन्हाई॥ सोकारण तुम्हार हमजाना। पैतुम निजमुखकरौ बखाना॥ हँसि बोले तबकृष्णबिहारी। सुनुललिताप्राणनसों प्यारी॥ गयेआजुहम गायचरावन। ग्वालबालसँगलैगहवरबन॥ तहांएक आयो भटभारी। नामबकासुर अतिभयकारी॥ कंस नृपतिने ताहि पठावा। धरि बकरूप चोंचफैलावा॥ लियो गउन को लीलि सुखारी। तब हम देखि क्रोध बिस्तारी॥ फारि चोंच राक्षसबध कीन्हा। प्राणपठाय यमपुरी दीन्हा॥ अतिश्रम भयो तासु के मारन। पुनि सबमिलि आये वृन्दाबन॥ श्रमबश गयो सोयसुनु ग्वारी॥ रही न आवन की सुधि प्यारी॥ औचक एक बिलारी आयो। उछलि ताख से मटुकि गिरायो॥भयो शब्द अति ताकोग्वारी। जागिपर्‌यों मैं नींद बिसारी॥

दो० आइगईसुधिमोहिंको प्यारीमिलनतुम्हारि।
हरबरायउठिचलिभयों काचीनींदबिसारि॥

सो० हौं आलसमें ताहि नैन अरुणहैं ताहिंसे।
बार बार जमुहाहिं और नहीं कछु भेदहै॥

चौ० मानहुं सत्य सत्य तुमग्वारी। और नहीं कछु भेद पियारी॥ सुनिललिता उरलिय लपटाई। जानति हौ मैं सब प्रभुताई॥ परम चतुरहैं आप कन्हाई। नहिं तुम मोसों बात बनाई॥ बहुरिश्याम मुखचुम्बन कीन्हा। अतिआनँद ग्वालि को दीन्हा॥

छंद हरिगीतिका॥

त्यहि समय श्री वृषभान तनया राधिका आवत भई। सजि अंग आभूषण सुखारी आभरण छादित ठई॥ चन्द्रबदनी खंजनयनी केहरी कटि शुभ बनी। उरोज देखत कंज लाजैं पिकवयनि गज गामिनी॥

दो० देखत राधाको बदन सकुचे नंद कुमार।
ललिता अति शर्मित भई आलीरूप निहार॥
बोली राधा बिहँसि कर ललितासों ये बैन।
आजुश्याम आयेयहां किस कारण सुख दैन॥
तब ललिता सकुचाय बोली राधासों बचन।
आली मूड़ पिराय झारन आये नँदसुवन॥

चौ० पैनाहीं कछु अच्छोहोवे। जस प्रभुझारैं तसहि पिरोवै॥ देखत तोहिं मिटी कछु पीरा। क्रम क्रम घटै बढ़ै नहिं बीरा॥ बैठिजाहू शय्या सुकुमारी। ममजीवन आई तुमप्यारी॥ बोली तबराधा मुसकाई। ललिता सों ये बैन सुनाई॥

सवैया॥

बैठे हैं श्याम अलीपर्य्यंकपैजादू पढ़े बहुमंत्र जनैया। टोना व टंबर जानत हैं बहु यंत्रन तंत्रन के अधिकैया।

रेखा सबै पहिंचानत हैं अरु मोहत हैं बशिकर्न करैया। हैं सब बुद्धि उजागर मोहन बैठिहों ना प्यारी प्यारे कि शैय्या॥

दो० सुनतबचन नँदलाल बोले राधासों बिहँसि।
क्योंमदमातीबाल म्वहिं तान्त्री बतावहीं॥

चौ० कबमें तुमपर जादू डारी। कीन्ह्यों वशि त्वहिं राधा प्यारी। दे बतलाय एक ब्रजगोरी॥ ज्यहि पर डारी होइ ठगोरी। नाहक दोष लगावो प्यारी। कहि झुठ वचन बढ़ावोरारी॥ हैत्वहि रूपक अधिक गुमाना सो प्यारी निश्चय हम जाना॥ हैं बहुतिक मेरे वृज बाला। एकसे एक रूपकीआला॥ रमिहों तिनसे चित्त लगाई। प्यारी तेरी सुर्तिभुलाई॥

दो० सुनत बचन वृजचन्दके राधागई रिसाय।
आई अपने भवनमें कान्हें बदन दिखाय॥

सो० गये कृष्ण मुरझाय बोले ललितासोंबचन।
राधा गै अनखाय अब प्यारी कैसी करौं॥

दो० मैंनहिं कछुताकोकह्यों येरी ललिताप्यारि।
म्वहिं बिसारि राधागई नैननसैनै मारि॥

सवैया॥

है म्वहिं प्राणन सों अतिप्यारि पियारी कहां गई मोहिं बिसारी। ज्योंबिन वारिहै मीन बिचारि परीतलफै तसहों सुकुमारी॥ हे गजगामिनि चन्द्रसों अननिहों अतिदुःखित मैं बिनप्यारी। बेगिमिलाव प्रिया ललिता शशि रूपकसों वृषभान कुमारी॥

दो० भे अचैन नँदलाल अति बाढ्यो काम अगाध।
राधा राधा रट लगी राधा राधा राध॥

सो० हे राधा सुकुमारि छोड़ि मोहिं तू कितगई।
प्राणनसोंअतिप्यारिमिलहुप्रियामोहिंहर्षिकर॥

दो० येरी राधा लाड़िली श्रीवृषभान कुमारि।
मेम नैननकी पूतली कहां गई सुकुमारि॥

छं० येरीश्यामा। बाढ्यो कामा॥ आवो प्यारी। क्रोधबिसारी॥

दो० ये ललिता मन मोहिनी जीवन राधा मोरि।
नहिं आवै सखि क्याकरों तूलावो करजोरि॥
सुनत बचन ललितासखी श्यामैंबहु समुझाय।
राधा ढिग जाकर चली बोली बैन सुनाय॥

सवैया॥

तोहिं बुलावत हैं नद नन्दन आलि चलौसब शोच बिहायकै। हैंअति श्याम तुम्हैं बिन ब्याकुल धायमिलौ तिनसों लपटायकै। रोष कहाकरती सजनी इतनोघन श्यामसों बैर बढ़ायकै। केलि कुतूइल कोकरि प्यारिबिहारि मिलौ शुभनैन देखायकै॥

दो० सुनत बचन राधाहँसी बोली बचन सुनाय।
मैं नहिं चलिहौं ऐसखी जहँहैं कुंवर कन्हाय॥
मोर कियो अपमान नाहक प्यारी कृष्णप्रभु।
जोनहिं बनै बखान तिनकी प्रीतिप्रतीतिनहिं॥

चौ० पुनि समुझायो ललिता ग्वारी। चलोरोष तजि

राधा प्यारी। हैं अतिदुखी उदास कन्हाई॥ जोतुमबिन-
मो बरणिन जाई॥ तिनसों मिलौ सखी हर्षाई। भरि
अङ्कम सब बैर बिहाई॥ पुनि बोली राधा सुनुग्वारी।
नाहक बात बढ़ावो प्यारी॥ जे कमरीके ओढ़न वारे।
हमरी गाय चरावन हारे॥ नित उठि दुहँहमारीगैयां।
तिनसों प्रीति न बनतन बनैयां॥ जायकहो प्यारी अहीर
सों। आई नाराधा तुतीरसों॥ कियोमोर तुम अति अप-
माना। जो मोसोंनहिं जाय बखाना॥

दो० असकहि राधाचुपरही पुनि ललिता अनखाय।
बहुत मानियो प्रियाको श्रीगिरिधर गुणगाय॥

सो० जब नहिं मान्योनेक चलीरोष करि श्यामपहँ।
बोली बचन सटेक सुनहु पियारे प्राणपति॥

दो० मैं समुझायों प्रियाको बहु तुम्हार गुणगाय।
वह नहिं आवै धाम मम बहुरि मोहिं अनखाय॥

सो० आपुहि लेव मनाय जाय त्वरित वृषभान पुर।
देखत तुम्हें कन्हाय मिली धाय राधा प्रिया॥

चौ० सुनत श्याम अति बिरह बढ़ाई। आय भवन
सोये सुखदाई॥ बिगत रैनिउठि प्रभुहर्षाई। धर्यो ज-
नाना भेष स्वहाई॥ कीनखाब को लहँगा पहिरो। जरी
कामकी ओढ्यो चुनरी॥ चोली पहिरिलियो बँदकसिकै
गेंद बनाय पहलको भरिकै॥ नख शिख भूषण साजि
कन्हाई। लै जोड़ा चूरिन सुखदाई॥ चलेश्याम वृभ-
भान पुराको। धरे मूड़ टूकनी जोरवाको॥ जहँ राधाका
मंदिरआही। तौन गैलनिकसे पुरमाही॥ देखि सखिन

को रूप मुरारी। जे राधाको थीं हितकारी॥ बोले तिनसों बचन बनाई। अतिहि नम्रके कुंवर कन्हाई॥

दो० चुरिया केऊ लेउगी अति उत्तम है जोर।
भांति भांति माणिकजड़े मुक्ता लग बहोर॥
हरी सुनहरी आदिरँग श्यामरंग मन लोल।
जो लेवो कोई सखी देउं बताय त्यहि मोल॥

चौ० सुनत बचन सब सखि हर्षाई। बोलीं मृदुल बचन सुखदाई॥ हम चूरी नहिं लेब पियारी। पै यक बात कहौं चुरिहारी॥ यहां बसत यक राधा ग्वारी॥ है वृषभान सुता सुनु प्यारी। लेईवह चूरी बहुजोरा॥ बेलमि जाव तनु तुम यहि ठोरा। देवैं तासों खबरि जनाई। लौटि आय त्वहिं चलों लेवाई॥ असकहि एक सखी उठिधाई। गै राधा ढिग हर्षबढ़ाई॥ बोली बचन प्यार सों सनिकै। राधा सों यह हँसि हँसि कहिकै॥ आई एक आजु चुरिहारी। अतिहि स्वरूपवान सुनु प्यारी॥ लियेजोर चूरिनको करमें। है बेंचतिप्यारी यहि गलमें॥ आज्ञा होय ताहिलैआवों। या चूरी लै तोहिं देखावों॥ बोलीराधा सुनु सुकुमारी। बेगि बुलाय लाव चुरिहारी॥ सुनत बचन सखि उठि हर्षाई। चुरिहारिनिको लियो बुलाई॥ देखि रूप राधा मुसकाई। बोली हँसिकर बैन सुनाई॥ कहँसे आईहै तू प्यारी। कौन नामहै तेरा ग्वारी॥ देख्यों कबहुं न तोहिं पियारी। कहां कि तूहै रहनेहारी॥ हँसिबोले तब गिरिवरधारी। ग्राम हमार गोकुला प्यारी॥ नाम हमार हवै मनमो-

हनि। बेंचौं चूरी हे सुख पोहनि॥ जो लेवो तुम राधा प्यारी। खोलि देखावों चूरी सारी॥

दो० भांति भांतिके जोरहैं हरी श्यामता आदि।
तिनके बिचबिच जड़ेहैं बहु मोलन मुक्तादि॥
जो प्यारी मनभावही लेवो जोर निहारि।
अतिहिस्वहावनजोरहैं त्वहिंलायकसुकुमारि॥

चौ० असकहि खोलिदियो देखराई। सब जोरन को मोल बताई॥ एक सहाना देखत जोरा। बोलीराधा हरिकी ओरा॥ याको मोल देहु बतलाई। है यह मम प्रसन्न बहुताई॥ हँसि बोले सुनु मेरी प्यारी। याको मोल बहुतहै भारी॥ सात अर्बकी हैयह ज्वारी। तुम्हरे लायक नहिं सुकुमारी॥ हरी पांति यामें नग सच्चे। मोती मूंगाहैं नहिं कच्चे॥ बोली राधा सुनु चुरिहारी। कैसी बातकहौ तू ग्वारी॥ डारे पहिरि अनगिने ज्वारी। एकते एक सरिस सुकुमारी। नकली जोड़ा मोहिं देखावो। सात अर्ब कीमत बतलावो॥ मैं नहिं लेहौं ऐसो जोरा। बेंचहुजाय ग्राम तुम औरा॥

दो० सुनतबचन अति क्रोधकर बोले कान्ह रिसाय।
टकहिल ज्वारा पहिरिकै बातैं कसबतिलाय॥

कवित्त॥

इन्द्रके गेह दरस्त जम्यो यक पीपर को सुनुऐ सुकुमारी। ताकी लाख निकारि बधूटिन जोर रच्यो अतियुक्ति पसारी। बीचनमें बहु रत्नजड़े अरु हीरनको

त्यहि टोन सुधारी। त्यहि जोरको प्यारी कहौं नकली ज्यहि सप्तमअर्ब कि कीमत ग्वारी॥

चौ० बोलीराधा सुनहु चुरहरी। हमने कियो हँसौवा ग्वारी॥ है बहुनीक जोर तुव प्यारी। दे पहिराय हमैं चुरिहारी॥ सुनि हँसि पकर्‌यो बांह मुरारी। तब राधा जान्यो गिरिधारी॥ हैं ये चञ्चल श्याम सयाने। सब अँगहैं इनके मर्दाने॥ मेरे काज धर्‌यो यह बाना। चुरिहारिनको रूप जनाना॥ असकहि बस्तरलियो निकारी। भे लज्जित अति कृष्णबिहारी॥ कियो हँसौवाराधा ग्वारी। सब सखियन मिल दैदै तारी॥ बढ़ीप्रीति कछु बरणि न जाई। भेअनंद अति कुंवर कन्हाई॥ करिलीला आये घर कान्हा। नितनव लीलाकरैं सुजान्हा॥ कृष्ण राधिकाकी यह लीला। जो कोउ पढ़िहैं सुजन सुशीला॥ अतिअनन्द लहिहैं महिमाहीं। अन्त स्वर्ग त्यहि दुर्ल्लभ नाहीं॥

दो० जै राधा जै गोपिका जै श्रीनंदकुमार।
जैवृन्दाबनपुर जहां कान्हाकरैंबिहार॥

इतिश्रीज्ञानआभूषणे कृष्णबिहारीशुक्लबदर्का निवासिबिरचिते चुरिहारिनलीला वर्णनोनाम नवमोंऽशः॥ ९॥

पुनि प्रभुकियो बिचार बाढ़े दैत्य अपार भुव।
करौं तिन्हैं संहार जेहि कारण अवतार लिय॥

चौ० यहां कंसअति करै अनीती। त्रासैं प्रजा धरा

को जीती ॥ मथुरा जाय ताहि प्रभु मारा। सकल सेन राक्षसी सँहारा ॥ उग्रसेन कहँ गद्दी दीन्हा। अतुल हर्ष पुर बासिन कीन्हा ॥ बहुरि मिले प्रभु पितुसों जाई। मिले मातुसों अति हर्षाई ॥ फिरि प्रभुरढे द्वारकाजाई। जेहि बिश्वकर्मा नई बनाई ॥ सहित मातुपितु अरुबड़ भाई। उग्रसेन को नृपति बनाई ॥ कियो दुष्ट बिन धरा सुखारी। हर्‌यो भार धरती को भारी ॥ भे मुनि गण सब आनँदपागे। भई प्रजा सब सुखित स्वभागे ॥ सूक्ष्म कह्योमैं ताको गाई। नहिं बिस्तार होत अधिकाई ॥ पढ़ोसुजन याको चित धरिकै। नंदनँदन को सुमिरन करिकै ॥ जासों मुक्ति मिलेकी आशा। सर्बपापको होइ बिनाशा ॥ अन्तबसौ हरिपुर मेंजाई। यासों भक्ति करौ सुखदाई ॥

दो० बहुरि कहौं अवतार जो होई आगे आय।
जब कलियुगके अन्तमें म्लेच्छा मयी लखाय ॥

चौ० ह्वैहै धर्म कर्मकी हानी। बढ़ीअधर्म न जाय बखानी ॥ करिहैं बिप्र शूद्रका कर्म। शूद्र लहैंगे द्विजका धर्म ॥ चारो बर्ण एकही ह्वै हैं। मानुषको मानुष तब खैहैं ॥ ह्वै म्लेच्छ जाई संसारा। बाढ़ी क्रोध पषंड अपारा ॥ मेघ वृष्टि करिहैं बहुथोरी। ह्वैहैं उल्कापात बहोरी ॥ मरिहैं प्रजाअन्नके दुक्खा। सपनेमिली न कबहूं सुक्खा ॥ निंदिहैं द्विज बेदन का भाई। तपिहैं सप्तसूर्य्य हरषाई ॥ सप्त बर्षकी कन्या जौन। करिहै बालक उतपन तौन ॥ ह्वैहैं व्यभिचारिणि अति नारि। मिलि हैं

आनसे निजपति मारि॥ यहिबिधि जब होइहैं उत्पात।
बालक करी पितापर घात॥ तबहोई कलंकि अवतार।
धरिहैं बिष्णु प्रजा हितकार॥ संभर मुरादाबाद बखा
न। तहँ देवशर्मा बिप्र सुजान॥ ताकी कन्या क्वारीजौ-
न। होइ कलंकि वाहीते तौन॥ तबप्रभु ह्वैकै अश्व स-
वार। करिहैं म्लेच्छ बंश संहार॥ थपिहैं द्विजका धर्म
बढ़ाय। सब अधर्मको नाश कराय॥ लागी तब सतयुग
हर्षाय। रही चैन दुनिया में छाय॥ बर्ण्यौं ताको मैं कछु
सार। हिये सुमिरि श्रीनंदकुमार॥ करहुपान याको
बुधलोग। है यह पान करन के योग॥

दो० पढ़िहैंजो चितलायकर हियेहर्षि धरिध्यान।
सकलसिद्धि तेहि देहिंगे कृपासिंधुभगवान॥

इतिश्रीज्ञानआभूषणेकृष्णबिहारीशुक्लबदर्कानि-
वासिबिरचितेकलंकीअवतारकथाबर्णनो
नामदशमोंऽशः॥१०॥

छन्दहरिगीतिका॥

निज मत्यनुसार सो यहि बनायो ज्ञानभूषण नाम
सों। करि युक्तभूतभविष्य अरुसम भेद दण्ड रु दाम
सों॥ पुनि बर्ण चारिहु केरकर्म सोजौन करि गति पा-
वहीं। कियो युक्त जो कछु भूल चूकसो पढ़ि सुजान ब-
नावहीं॥ नन्द अग्निरुद्वीप चन्द्र मिलाय संबत जानि
ये। शुचि माघमासरु कृष्णपक्षसु शुक्रवासर मानिये॥
बद्रिका ग्राम निवासि कृष्णबिहारि यहपुस्तक रच्यो।

शुभ छंदबंध प्रबन्ध सो निर्द्वंद ह्वै यहि रच पच्यो॥

दोवैकुन्द॥

सुरसरि तट मम ग्राम मनोहर बिप्र वृन्दको बासा।
सुकुल बंश अवतंस नाम मम कृष्णबिहारि प्रकासा॥
पुरी बद्रिका है प्रसिद्ध अति ग्राम मोर को नामू।
परगन हड़हा अवधदेश शुभ ज़िला कहत उन्नामू॥

इतिश्रीज्ञानआभूषणद्वितीयखंडसमाप्तम्शुभमस्तु॥

इति॥

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
संस्कृतकीपुस्तकें	**संस्कृतउर्दूटीका**	प्रतापविनोद
लघुकौमुदी	मनुस्मृति	मनमोहनचरित्र
सिद्धान्तचंद्रिका	विष्णुहारीत	भविष्योत्तरपुराण
अमरकोषतीनोंकांडस०	महिम्नस्तोत्र	स्कन्दपु०कासेतुबन्धखंड
पञ्चमहायज्ञ	व्रतार्क	मनोहरकहानी
निर्णयसिंधु	याज्ञबल्क्यस्मृति	भ्रमजालकनाटक
संग्रहशिरोमणि	**संस्कृतभाषाटीका सहित**	सीतावनबास
भगवद्गीतासटीक		किस्सामर्दऔरत
दुर्गापाठमूल	अमरकोष	नवीनसंग्रह
दुर्गापाठसटीक	याज्ञबल्क्यस्मृति	सुदामाचरित्र
विष्णुभागवत	संध्यापद्धति	ज्ञानतरंग
अपराधभंजनस्तोत्र	व्रतार्क	सप्तशतिका
दुर्गास्तोत्रसटीक	भगवद्गीताटीकाह०बं०	बिजयचंद्रिका
कायस्थकुलभास्कर	भगवद्गीताटीकाआ०गि०	रामायणवाल्मीकीय
कायस्थधर्मनिरूपण	गीतगोबिन्द	भुवनेशभूषण
तथाछोटा	कथासत्यनारायण	महाभारतसबलसिंह चौहानकृत
मथुरासभा	परमार्थसार	
तुलसीतत्वभास्कर	शार्ङ्गधरसंहिता	सुन्दरबिलास
रामबिवाहोत्सव	पाराशरीसटीक	गीतरसिका
ज्योतिष	शीघ्रबोधसटीक	कबित्तावलीरामायण म०
मुहूर्त्तगणपति	लघुजातक	इलाजुलगुरबा भाषा
मुहूर्त्तचक्रदीपिका	षट्पञ्चाशिका	रसायनप्रकाश
मुहूर्त्तचिन्तामणिसटीक	सामुद्रिक	रामचंद्रिका सटीक
मुहूर्त्तमार्त्तंडसटीक	**नवीनकिताबें**	वाराह पुराण
मुहूर्त्तदीपक	कालिंजरमाहात्म्य	सौदागरलीला
वृहज्जातकसटीक	सुधामन्दाकिनी	रीडर नम्बर १
जातकालंकार	रामबिनयशतक	रीडर नम्बर २
जातकाभरण	नारीबोध	सीक्रेल
होरामकरंद		

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
वेदान्त	लावनी	मिश्रितमाहात्म्य
योगवाशिष्ठ	**किस्सावग़ैरह**	गोकर्णमाहात्म्य
आनन्दाऽमृतवर्षिणी	नानार्थनौसंग्रहावली	श्रीगोपालसहस्रनाम
सांख्यतत्वकौमुदी	ब्रह्मसार	कथासत्यनारायण
काव्य	शिवसिंहसरोज	हनुमान बाहुक
सूरसागर	भक्तमाल	जनकपच्चीसी
कृष्णसागर	इन्द्रसभा	हरिहरसगुणानि० प०
विश्रामसागर	विक्रमविलास	बनयात्रा
प्रेमसागर	बैतालपच्चीसी	कायस्थवर्णनिर्णय
ब्रजविलासबड़ा व छोटा	पद्मावतीखण्ड	बिहारवृन्दाबन
कृष्णप्रिया	शुकबहत्तरी	समरबिहारवृन्दाबन
विजयमुक्तावली	बकावलीसुमन	कल्पभाष्य
अनेकार्थछन्दोर्णवपिङ्गल	चहारदरवेश	**दरशी**
कविकुलकल्पतरु	किस्साहातिमताई	अक्षरावली
रसराज	अपूर्व्वकथा	स्वयम्बोध
सत्सई मूल तथा सटीक	किस्सागुलसनोवर	ज्ञानचालीसी
सभाविलास	सहस्ररजनीचरित्र	दोहावली
तुलसीशब्दार्थ	सिंहासनबत्तीसी	बालाबोध
भजनावली	राविन्सन्काइतिहास	विद्यार्थीकीप्रथमपुस्तक
प्रेमरत्न	सीताहरण	किताबजंची
युगुलविलास	सतीविलास	गणितकामधेनु
चित्रचन्द्रिका	**मुतफर्कात**	लीलावती
बारहमासाबलदेवप्रसाद	शनिश्चर की कथा	पटवारीकीपुस्तकें४भाग
मनोहरलहरी	ज्ञानमाला	**ज्योतिषभाषा**
गंगालहरी	गोपीचन्द्रभरतसे	जातकचन्द्रिका
यमुनालहरी	कथाश्रीगंगाजीकी	जातकालंकार
जगद्विनोद	अवधयात्रा	दैवज्ञाभरण
शृङ्गारबत्तीसी	भरतरीगीत	ज्ञानस्वरोदय
पद्मावत	दानलीला नागलीला	रमलसार
राग	रासलीला द्वा० प्र० कृत	इन्द्रजाल
रागप्रकाश	दोहावली रत्नावली	

